प्रजनन शक्ति से ख़तरनाक खिलवाड़

नॉरप्लांट व हॉर्मोन युक्त गर्भ निरोधक

सरोजिनी, मलिका विर्दी, आभा भैया

प्रजनन शक्ति से ख़तरनाक खिलवाड़

नॉरप्लांट व हॉर्मोन युक्त गर्भ निरोधक

सरोजिनी, मलिका विर्दी, आभा भैया

जागोरी
JAGORI

विशेष आभारः

वीणा शिवपुरी, कल्पना विश्वनाथ और शान्ति को किताब की संकल्पना के लिए
लक्ष्मी (सहेली : टेबल बनाने में सहयोग
सरोज, अल्का : टाइपिंग
जूही एवं जागोरी टीम : इस किताब को निकालने में मदद के लिए

प्रकाशन - 1994

प्रकाशक - जागोरी

औरतों का ट्रेनिंग और कम्यूनिकेशन सेंटर
सी - 54, साऊथ एक्सटैंशन भाग - 2
नई दिल्ली - 110049

टेलीफोन : 642 7015

मुखचित्र एवं सज्जा : मलिका विर्दी

मुदणः विज़न वर्डट्रोनिक,
111/56 नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110 019

प्राक्कथन

आज हम औरतों के सामने बार-बार एक सवाल आ खड़ा होता है, कि अगर बच्चे पैदा करने की ज़िम्मेदारी हमारी है, बच्चा रोकने का बोझ हम पर है, तो सरकार हमें ऐसे साधन क्यों नहीं देती जो सुरक्षित, आसान और सस्ते हों। सरकार को हमारे शरीर और स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने का हक़ किसने दिया है? सरकार क्यों नित-नए ख़तरनाक गर्भ निरोधक हम पर थोपे जा रही है?

ख़तरनाक गर्भ निरोधक साधनों का इस्तेमाल औरतों के पहले ही से गिरे स्वास्थ्य पर दोहरी चोट करता है। बच्चे पैदा करना और रोकना दोनों ही ख़तरनाक फैसले हैं। फिर हम किस ख़तरे का चुनाव करें?

हम केवल माएं नहीं हैं, औरतें भी हैं। हमारी और भी ज़रूरतें हैं। इसलिए हम विरोध करती हैं सरकार की आबादी नियंत्रण नीतियों का, जो हमें सिर्फ बच्चे पैदा करने की मशीन के रूप में देखती हैं।

हमें हमारे साथ ज़बर्दस्ती करने वाली सरकारी नीतियां नहीं चाहिए। यह हमारे मानव अधिकारों का हनन है। हमें चाहिए औरतों के प्रति ज़िम्मेदार और जवाबदेह स्वास्थ्य व्यवस्था जो सिर्फ गर्भ निरोधक साधन ही ना दे बल्कि सभी अन्य बीमारियों के प्रति संवेदनशील हो।

इस पुस्तिका में हमने अपने-अपने स्तर पर किए विरोध को बांटने की कोशिश की है। पर अब वक्त आ गया है, जानकारी फैलाने का, भविष्य की रणनीति तय करने का और सामूहिक विरोध तीव्र कर एक दूसरे को बचाने का।

जगोरी समूह

विषय वस्तु

1. जनसंख्या नियंत्रण की राजनीति 1-19

2. औरतों की आवाज़ 20-30

3. वार नॉरप्लांट का 31-52

4. महिला आंदोलन की भूमिका 53-67

5. गर्भनिरोधकः नफ़ा या नुकसान 69-73

जनसंख्या नियंत्रण की राजनीति

बच्चों का खेल

आबादी और गरीबी की राजनीति

हमारे कितने बच्चे हों?

इस सवाल का जवाब,
हर समाज में,
हमारी माली हालात,
हमारी परम्पराएं
और खासकर, समाज
में हम औरतों का
दर्जा और निर्णय
लेने की ताकत में
मिलता है।

ये हल्ला यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका ने 1921 में, यानि 73 साल पहले शुरू किया–रूस में हुई 1917 की क्रांति के बाद। और फिर 1952–यानि 42 साल पहले अमेरिका ने हमारे देश भारत में शोर मचाना शुरू किया। उसके बाद आज तक इस देश की तमाम सरकारें और शासक वर्ग यही दोहराते गये कि "देश में गरीबी हम गरीबों की वजह से है।"

संसाधनों की हेर फ़ेर

शक्तिशाली और सत्ताधारी ताकतें यह प्रचार करती हैं कि गरीबी का मुख्य कारण जनसंख्या विस्फोट है यानि तेज़ी से बढ़ती हुई लोगों की आबादी।

इस पूरे शोरगुल में वे एक बहुत बड़े सच और चोरी से सबका ध्यान परे कर लेते हैं और वो है- अमीर, सत्ताधारी लोग अपने हिस्से से कहीं ज़्यादा संसाधन - ज़मीन, सम्पत्ति, खान-पान सुख-सुविधाएं आदि हड़प रहे हैं।

उनका कहना है कि गरीब मेहनतकश अपराधी हैं, क्योंकि वो ज़्यादा बच्चे पैदा करते हैं। दरअसल संसाधनों का गैर बराबर बँटवारा ही गरीबी का मुख्य कारण है। हमारे देश में थोड़े से लोगों के पास बहुत ज़्यादा धन, संपत्ति व राजनैतिक सत्ता है और बहुत सारे लोगों के पास कुछ भी नहीं, केवल उनकी गरीबी व असुरक्षित जीवन है।

वे समाज में जड़ से इस असमान बंटवारे की समस्या को नहीं उखाड़ना चाहते क्योंकि धनी शासक लोग इस ग़ैर बराबरी के बल से गरीब मेहनतकशों पर अपनी आर्थिक और राजनैतिक सत्ता बनाए रखते हैं। गरीबी और शोषण को अगर हटाना पड़े तो उनकी सत्ता का किला ही ढह जायेगा।

जिन कारणों से विकासशील देशों में मेहनतकश और शोषित लोगों को ज़्यादा बच्चों की ज़रूरत पड़ती है, उन हालातों को बदलना तो दूर, अमीर और शक्तिशाली उल्टा जनसंख्या विस्फोट का प्रचार कर, जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों को लोगों पर थोपते हैं।

बड़ा परिवार, "सफल" परिवार

मेहनतकश गरीब इतने बच्चे पैदा क्यों करते है

हमारे बच्चे 7-8 साल की उम्र से घर का सारा काम- पानी भरना, ईन्धन लाना, और जब मां बाप काम पे हों, तो छोटे भाई-बहनो को सम्भालते हैं।

वो खेतों में काम करते हैं साथ में गाय, बकरी की भी देख-रेख करते हैं।

बच्चे पालना हमारे लिये ज़्यादा महंगा नहीं - 11-12 साल की उम्र से तो वो घर में अपनी कमाई देने लगते हैं।

मैं शायद इतने बच्चे चाहती नहीं, पर मेरे पति को लड़के चाहिये... और उन्हें वो तरीके पसन्द नहीं।

हमें तो बच्चे चाहिये ही हैं वरना बीमारी और बुढ़ापे में कौन हमें सम्भालेगा?

और शायद किसी एक को शहर में सर्विस मिल जायेगी।

हमारे तो कितने बच्चे मर जाते हैं। हमे कम से कम 5-6 बच्चे तो चाहिये ही, तभी तो हमारे कुछ बच्चे जवानी देख पायेंगे।

इसीलिए गरीब परिवारों को ज़िंदा रहने के लिए बच्चे बहुत ज़रूरी हैं

हमारे कितने बच्चे हों यह निर्णय हम समझ बूझ कर लेते हैं।

हम गर्भ नियंत्रण चाहते हैं, क्योंकि हम अच्छी तरह समझ रहे हैं कि बहुत ज्यादा बच्चे हमारी स्थिति को और गंभीर बना सकते है पर वो हमारी गरीबी व शोषण का कारण नहीं हैं।

और ये भी एक कड़वा सच है कि मेहनतकश गरीब तबके में बाल मृत्युदर बहुत ज़्यादा है। जिससे 1000 में से 92 बच्चे 5 साल की उम्र से पहले ही मर जाते हैं। कुछ प्रांतों में हालात इससे भी ज़्यादा गंभीर है।

धर्म, जाति व सांस्कृतिक मान्यताएं बच्चों की मुत्युदर पर असर डालती हैं। जहां औरतों की समाज में स्थिति खराब है वहां लड़कियों की मृत्युदर ऊंची होती है। हमारे देश में उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, बिहार और जम्मू कश्मीर में छोटी उम्र में लड़कों की बजाय लड़कियां ज़्यादा मरती हैं।

लोग छोटा परिवार तभी चुनते हैं :

- जब उनके पास आर्थिक सुरक्षा हो,
- जब काम, आवास, बुढ़ापे और बीमारी की पूरी व्यवस्था हो,
- जब जनता में सुख सुविधाओं का बराबर बंटवारा हो,
- जब समाज में औरतों का दर्ज़ा सही हो,

विकसित, औद्योगिक देशों में ऐसा ही हुआ है।

जनसंख्या विस्फ़ोट का — मिथ्या विस्फ़ोट

सबसे बड़ा
अपराधी

दुनिया भर के धन व संसाधनों का आज के युग में सबसे बड़ा लुटेरा — ये युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका में रहता है इसके रुपये को डॉलर कहते हैं – $ (डॉलर)

(आंकड़े दिमाग को हैरान कर देते है,
पर कुछ बातें जानना जरूरी है।)

सबसे पहले अमेरिका द्वारा प्रचलित जनसंख्या विस्फोट के नारे के अंदर कई मिथक छिपे हुए हैं।

अपने आप में अधिक जनसंख्या घनत्व किसी देश को गरीब नहीं बनाता। यूरोप में चार ऐसे औद्योगिक, अमीर देश हैं जिनका जनसंख्या घनत्व भारत से अधिक है। दो उदाहरण हैं–

सन् 1950 से दुनिया में खाद्य उत्पादन जनसंख्या बढ़ोत्तरी से ज़्यादा तेज़ी से बढ़ा है। तब से 1975 के बीच प्रति व्यक्ति अनाज उत्पादन 4.5 प्रतिशत बढ़ा है।

यह भी सच नहीं है कि दुनिया में सब लोगों के लिए पूरा खाना नहीं है।

पर साथ ही हरित क्रांति ने हमारे जैसे कई गरीब देशों में ग़ैर बराबरी की खाई को और गहरा कर दिया। छोटे गरीब किसान अपनी ज़मीन से बेदखल हो गए और शहरों की गरीबी और बेबसी की ओर पलायन करने पर मजबूर हो गए।

अमेरिका दुनिया के संसाधनों का एक तिहाई हिस्सा हजम कर जाता है जबकि उसकी जनसंख्या विश्व जनसंख्या की मात्र 6 प्रतिशत है।

और तो और गरीब विकासशील देशों में (जिन्हें तीसरी दुनिया के देश भी कहा जाता है) उत्पादित खाद्य सामग्री की खपत वहां नहीं होती। उसे बहुराष्ट्रीय

कंपनियों द्वारा ख़ासकर अमीर, औद्योगिक देशों यानि पहली दुनिया कहलाने वाले देशों के उपभोग के लिए वहां ले जाया जाता है।

पहली दुनिया और हमारे देश के सत्ताधारी वर्ग ने अन्यायपूर्ण व्यवस्था व उपभोग दौड़ को बनाये रखने के लिए एक आसान हल निकाला है–

जनसंख्या को जैसे भी हो, उस स्तर तक सीमित रखे जिससे किसी न किसी तरह यह अन्यायपूर्ण व्यवस्था बनी रहे।

वरना तीसरी दुनिया के गरीब लोगों के असंतोष में ऐसा उबाल आयेगा जो इस पहली दुनिया के अमीरों की व्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ा खतरा बन जायेगा।

घर, देश, विदेश - पितृसत्ता और पूंजीवाद की साठगांठ

भारत दुनिया के उन पहले कुछ देशों में से है जिन्होंने 1952 में सरकारी तौर पर परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाया था। सबसे पहले इसके लिए फोर्ड फाउन्डेशन ने 9 लाख डॉलर का अनुदान दिया था।

आज भी पहली दुनिया के अमीर देश और उनकी कई स्वायत्त एवं सार्वजनिक एजेंसियां जैसे यू. एन. एफ. पी. ए., पॉप्युलेशन काउंसिल, अर्न्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक आदि, हमारे जैसे और भी तीसरी दुनिया के देशों को आबादी को बढ़ने से रोक लगाने के नियंत्रण के लिए आर्थिक अनुदान और साथ में तकनीकी मदद दे रहे हैं।

सभी अनुदान और साथ दी गई तकनीक के साथ शर्तें जुड़ी हुई हैं।

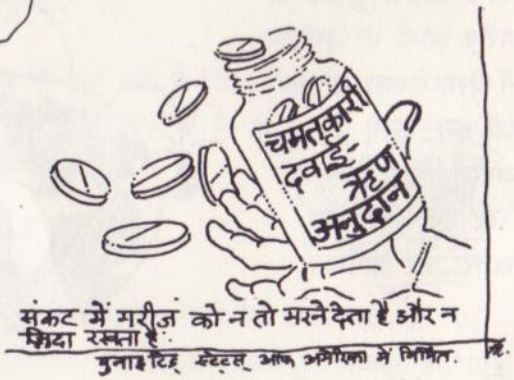

दाता देश उनके द्वारा तय की गई प्राथमिकताओं के लिए मदद देने के साथ ही विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण और अपने हुक्म मनवाने की ताकत भी हथिया लेते हैं। जैसे कि हमारे कितने बच्चे हों ऐसे निजी फैसलों से जुड़ी नीतियां बनाने ओर उन्हें लागू करने की सत्ता भी अपने हाथ में ले लेते हैं।

श्वेत सत्ताधारी पहली दुनिया के मर्दों की यह सुनियोजित चालें स्पष्ट रूप से केवल जनहित विरोधी ही नहीं हैं साथ में नारी विरोधी भी हैं।

दूसरी ओर हमारी सरकार ने दबाव में आकर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए धनराशि में भारी कटौती की है। और स्वास्थ्य सेवाओं के निजिकरण करने की प्रक्रिया भी ज़ारी है यानि उन्हें पाने के लिए लोगों को अब पैसा देना पड़ेगा। दूसरी ओर ये पैसा जनसंख्या नियंत्रण के कार्यक्रमों पर खर्च किया जा रहा है।

और तो और राशन की व्यवस्था को ही खत्म करने की बातें की जा रही हैं। साथ में सरकारी स्तर पर यह प्रयास भी जारी है कि जिनके दो से अधिक बच्चे हैं उन्हें अगले बच्चे के लिए मातृ सुविधाएं न दी जायें। ऐसे लोगों को संसद, विधानसभा और पंचायत के चुनावों में खड़े होने की कानून मनाही लागू करने की भी चर्चाएं हैं।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियो ने अपनी रोटी सेकी

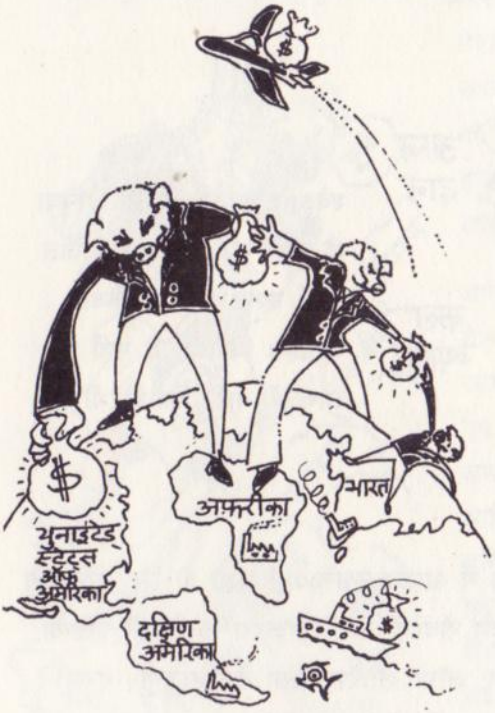

बहुराष्ट्रीय कंपनियों का मुख्य उद्देश्य मुनाफ़ा कमाना है। यह कंपनियां विश्व व्यापार पर पूरी तरह से छाई हुई हैं और अपने ही बनाये कानूनों पर चलती हैं। जहां मुनाफ़ा दिखा वहीं अपना कारोबार जमा लिया। ये किसी सरकारी कानून और स्वतंत्र बाज़ार प्रक्रिया को नहीं मानती हैं।

"और ये कंपनियां अपना मुनाफ़ा वापिस अमीर, शक्तिशाली देशों में ले जाती हैं।"

दरअसल बहुराष्ट्रीय कंपनियां नित नई तकनीकों द्वारा अलग–अलग दवाइयों का निर्माण करती हैं। और अपने इस माल को बेचने के लिए वो लगातार बाज़ार की तलाश में रहती हैं। हमारे जैसे देशों को दी गई अनुदान की राशि से किसी तरह वो अपनी बनाई दवाइयों को हमें ही खरीदने को मजबूर करती हैं। तीसरी दुनिया के बाज़ारों पर कब्ज़ा करके ये कंपनियां अपने खज़ाने भरती रहती हैं।

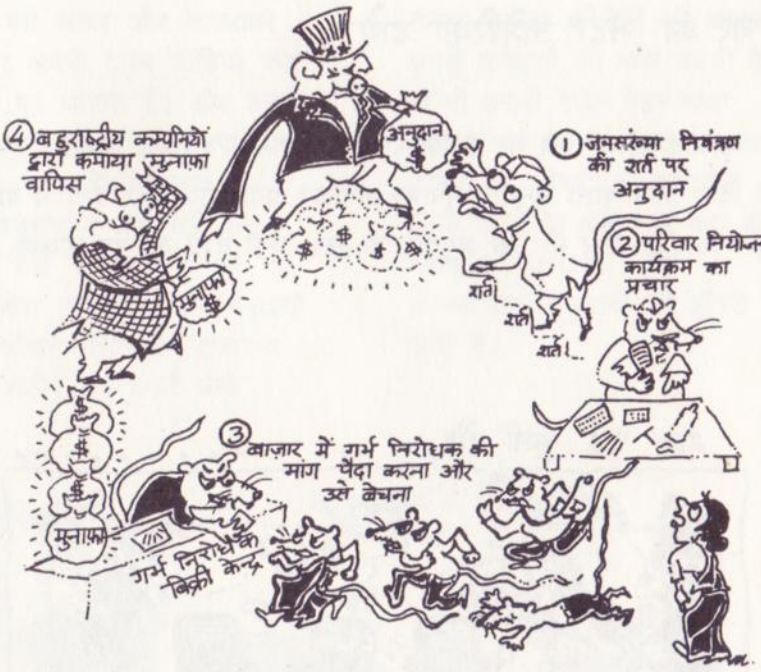

'पॉप्युलेशन काउंसिल' नामक संस्था ने अमरीकी सरकार के समर्थन से नारप्लांट गर्भ–निरोधक तरीके का निर्माण किया ताकि पहली दुनिया की निजी कंपनियां व निर्माता उसे बना सकें और तीसरी दुनिया में उसे बेचें।

पहले जब हमारे देश में विदेशियों का राज था तो हम जानते थे कि वो हमारे हिमायती नहीं हैं। पर आज उन्होंने नये मुखौटे पहन लिए हैं। उनके रहमदार अनुदान देने वाली छवि के पीछे उनका स्वार्थ समझना होगा। वो हमें कर्ज़ और अनुदान देकर हमसे एक बड़ा मुनाफ़ा कमाते हैं।

घर का भेदी अमेरिका ढाये

अजीब दास्तान तो यह है कि भारत का शासक वर्ग यह जानते हुए कि हमें दिया जाने वाला अनुदान मुनाफ़ा कमाकर अमीर पूंजीवादी देशों में वापिस पहुंच जाता है–फिर भी उस अनुदान के लिए उन्हीं देशों का मुंह ताकता है।

हमारे देश के शासक वर्ग, धनी उद्योगपति और वैज्ञानिकों को इस अनुदान से बहुत फ़ायदा होता है जबकि अनुदान–ऋण के जाल में फंसकर हमारा देश गरीब होता जाता है। इसीलिए वे विदेशियों के साथ एक आवाज़ में चिल्लाते हैं कि **ज़्यादा बच्चे पैदा करने से भारत में गरीबी बढ़ रही है।** और हम अपने निर्णय लेने की ताकत खो देते हैं।

ये वर्ग अमीर और ताकतवर बनकर अपनी दमन नीतियों को लोगों पर थोपता है। और हमारे मूल अधिकारों पर चोट पहुंचाने से भी नहीं हिचकिचाता। कई बार बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अपने देश के नागरिकों पर नई, असुरक्षित तकनीकों और दवाइयों का परीक्षण करने की इजाज़त नहीं होती। तब हमारे जैसे तीसरी दुनिया के देशों की आबादी उनके परीक्षणों की बलि चढ़ती है, वो भी हमारी गरीब मेहनतकश औरतें। जब इन कंपनियों ने पहली दुनिया की औरतों का इस्तेमाल किया है तो वो अधिकतर वहां की गरीब, अश्वेत (काले) और अल्पसंख्यक समुदायों की औरतें होती हैं।

हम औरतों को पूरी और सही जानकारी देना तो दूर रहा, हमारी विरोध करने की ताकत को भी बार–बार कुचला जाता है। शासक वर्ग खुलेआम नागरिक अधिकारों का हनन करता है इस तरह वे हमसे मुनाफ़ा ही नहीं कमाते साथ में वे हमारे निजी जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर नियंत्रण पा लेते हैं।

निशाना कौन ?
गरीब, औरतें, अल्पसंख्यक समुदाय व पिछड़ी जनता

हमारी सरकार एक निश्चित योजना के अंतर्गत उन लोगों को निशाना बनाती है जिन्हें वो आबादी बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार ठहराती है। यानि हमारी सरकार निष्पक्ष नहीं है। निशाना बनते हैं गरीब अल्पसंख्यक समुदाय, आदिवासी, दलित और इनकी औरतें।

सरकार की परिवार नियोजन नीतियां और कार्यक्रम वर्गीय, जातीय, लैंगिक भेदभाव और साम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों की जीती जागती मिसाल है।

कहने को तो कार्यक्रम "परिवार" कल्याण का है, पर बच्चों को पैदा होने से रोकने का सारा बोझ औरत के शरीर और व्यक्तित्व पर लादा जाता है, जबकि आदमी परिवार का "मुखिया और कर्त्ता–धर्त्ता" होने का पूरा श्रेय लेता है। बच्चा पैदा करने में औरत और मर्द दोनों की भागीदारी होती है परन्तु पैदा करने की तकलीफ से मर्द बच निकलता है। इस पुरुष प्रधान नज़रिये से ग्रस्त समाज और शासकों ने बार–बार औरतों के साथ मनमानी की है।

और परिवार नियोजन कार्यक्रम में सरकार की ज़बरदस्ती खुले रूप से देखने को मिलती है।

औरतों को खुद के शरीर के बारे में, बच्चे होने की प्रक्रिया या उसे रोकने के तरीकों के बारे में कुछ नहीं बताया जाता।

दूसरी ओर हमारे जीवन से सीधा ताल्लुक रखने वाली नीतियों के पीछे की राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सियासत से है हमें अनजान रखा जाता है।

जानकारी की कमी और फैसले लेने के अधिकारों के छीने जाने की वजह से हमारी स्थिति कमज़ोर पड़ जाती है।

और इसी का नाजायज़ फ़ायदा उठाकर शासक वर्ग परिवार नियोजन कार्यक्रम के आंकड़े पूरे करने के लिए हमें निशाना बना लेता है।

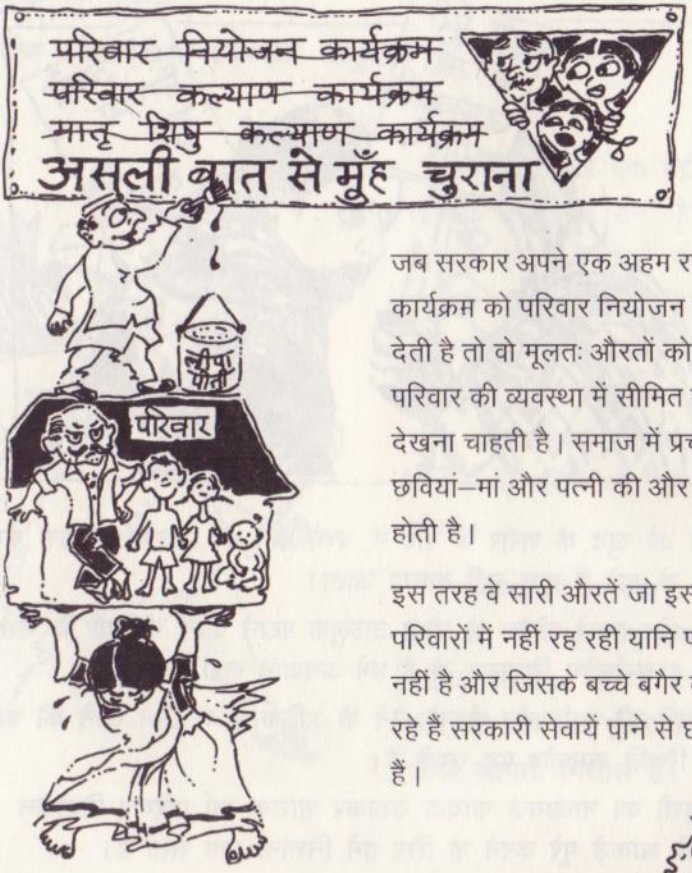

जब सरकार अपने एक अहम राष्ट्रीय कार्यक्रम को परिवार नियोजन का नाम देती है तो वो मूलतः औरतों को केवल परिवार की व्यवस्था में सीमित करके देखना चाहती है। समाज में प्रचलित दो छवियां–मां और पत्नी की और मज़बूत होती है।

इस तरह वे सारी औरतें जो इस तरह के परिवारों में नहीं रह रही यानि पत्नियां नहीं है और जिसके बच्चे बगैर बाप के जी रहे हैं सरकारी सेवायें पाने से छूट जाती हैं।

यह साफ है कि परिवार कल्याण के नाम पर सरकार केवल औरतों की उर्वरता पर नियंत्रण पाना चाहती है।

आज तक मर्दों के लिए केवल दो गर्भ-निरोधक बनाये गये है, जबकि औरतों के लिए नित नये खतरनाक तरीके निकाले जा रहे हैं।

भारत सरकार ने घर के मुखिया "मर्द" को एक बार इस कार्यक्रम का निशाना बनाया और वो था 1975 के आपातकाल के दौरान। सरकार ने अपने निर्धारित "टार्गेट" पूरे करने के लिए, नसबंदी करवाने के लिए बहुत सारे लालच दिये। मर्दों को खास "प्रोत्साहन" ज़मीन का दिया, और शहरों में घर बनाने के लिए प्लॉट का वादा किया।

पुरुष प्रधान नज़रिये के साथ इस दौरान सरकार का साम्प्रदायिक व वर्गीय चरित्र भी उभरा। गरीब खासकर मुसलमान मर्दों पर सबसे ज़्यादा ज़ोर ज़बरदस्ती व आतंक फैलाने वाले कार्यक्रम ने एक व्यापक विरोध को जन्म दिया जिसकी वजह से उस समय की सरकार चुनाव हार गई और सत्ता का तख्ता पलट गया।

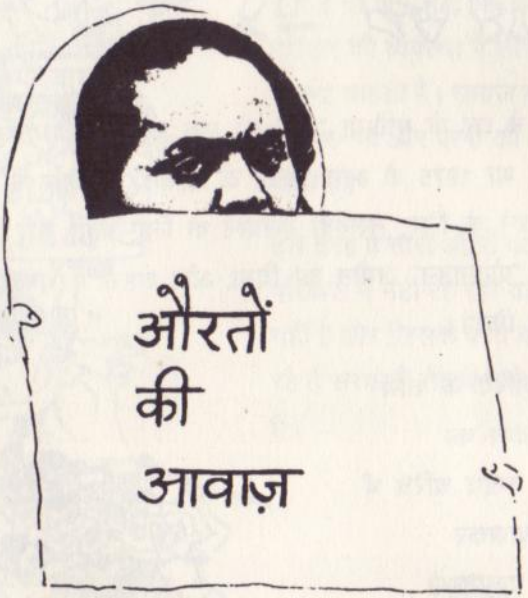
औरतों
की
आवाज़

हमारी आवाज़

हमारी आवाज़ सदियों से दबाई गई है। यहां तक कि हम अपने खिलाफ़ फैसले करने पर मजबूर हो जाती हैं। परिवार की खातिर हम खाना सबसे कम और आखिर में खाती हैं। अपने बेटों को बेटियों से ज़्यादा खान–पान देती हैं। हमारे शरीर, यौनिकता और उपजाऊपन पर भी अधिकार मर्दों का है हमारा नहीं।

शासक वर्ग, सरकार और स्वास्थ्य व्यवस्था इस समाजीकरण का पूरा फ़ायदा उठा, हमारी आवाज़ को अलग–अलग तरीकों से दबा रही है।

हमारी असलियत

अपनी परिस्थितियों में घिरी एक अकेली औरत के लिए गर्भ निरोध के बारे में फैसला करना आसान नहीं। क्योंकि इन खतरनाक तरीकों का असर हज़ारों मज़बूर औरतों की सेहत और आने वाली पीढ़ियों के लिए भयंकर अन्जाम ला सकता है।

इस तानाकशी और खींचातानी के अलावा औरतों पर और भी महत्त्वपूर्ण दबाव हैं–

- एक तरफ गरीबी मेहनतकश लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने को मजबूर करती है। दूसरी ओर मजबूरी में औरतें सरकारी राहत स्कीमों से रोजी रोटी कमाने के लिए सरकारी परिवार नियोजन कार्यक्रम के चंगुल में फंस जाती है। जैसा अकाल राहत योजना के दौरान राजस्थान में हुआ। या फिर देश में 1975 के आपातकाल के समय।

  शिक्षित संपन्न महिलाओं पर दबाव भी कम है, उनकी सेहत भी बेहतर है और उन्हें सुविधाएं भी ज़्यादा उपलब्ध है। वैसे भी इस वर्ग को कम बच्चों की ज़रूरत है। और इनके साथ ज़बरदस्ती करना भी आसान नहीं।

- परिवार की विचारधारा का सहारा लेकर धर्म औरत के शरीर को केवल पत्नी या मां की भूमिका में ही देखता है और उसे केवल परिवार चलाने वाली समझता है।

धर्म के नाम पर रूढ़िवादी हिन्दू यह मिथ्या फैला रहे हैं कि मुसलमानों की संख्या बहुत बढ़ रही है। हिन्दू औरतों पर गर्भ निरोधक न इस्तेमाल करने का दबाव डालां जा रहा है। यही सांप्रदायिक नज़रिया मुसलमान औरतों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों का खास टार्गेट बना रहा है।

दूसरी तरफ मुसलमान और कैथलिक इसाई औरतें चाहने पर भी गर्भ–निरोध का इस्तेमाल करने में झिझकती हैं क्योंकि इसे अधार्मिक करार दिया गया।

आज भी हमारे देश में बेटों की मांग बनी हुई है। यहां तक कि लोग लालची डाक्टरों एवं प्राइवेट क्लिनिकों से मिलकर यह पता लगा लेते हैं कि कोख में बढ़ता हुआ भ्रूण लड़का है या लड़की। और फिर एक बड़े पैमाने पर देश भर में केवल लड़की भ्रूणों का गर्भपात किया जा रहा है।

लड़का पैदा हो या लड़की यह तो आदमी के वीर्य में शुक्राणुओं द्वारा तय होता है।

पर इस पुरुष प्रधान समाज में लड़कियां पैदा करने पर औरतों को दोषी माना जाता है। लड़की का भ्रूण लड़के से ज़्यादा ताकतवर होने पर भी आज औरतों की संख्या पुरुषों से लगातार कम होती जा रही है। जिसे प्रकृति ज़्यादा ताकतवर बनाकर भेजती है उसे समाज के भेदभाव कमज़ोर कर देते हैं। जबकि पूरी परवरिश और मौका मिलने पर लड़कियां सब कुछ हासिल कर सकती हैं।

हम में से जिन औरतों के बच्चे न हुए हों या न हो पायें हों – उन्हें यह समाज "बांझ" कहकर तिरस्कृत करता है। चाहे बच्चा पैदा न होने का कारण आदमी ही हो।

इस समाज और सभी धर्मों में मां बनने को न केवल सराहा जाता है बल्कि औरतों के लिए ज़रूरी माना जाता है। बस मां बनने के अलावा औरत के शरीर की कोई भूमिका नहीं मानी जाती। और बगैर मां बने उसकी कोई इज्ज़त नहीं है।

आदमी की यौन इच्छा हर समय पूरी करना औरत का धर्म समझा जाता है। इसमें औरत की इच्छा होना या न होना कोई मायने नहीं रखता।

खुद आदमी गर्भ निरोधक तरीके इस्तेमाल नहीं करते क्योंकि यह उनकी मर्दानगी का सवाल है। वैसे भी आज के दिन मर्दों के लिए केवल दो प्रकार के तरीकों का आविष्कार किया गया है—निरोध और नसबन्दी।

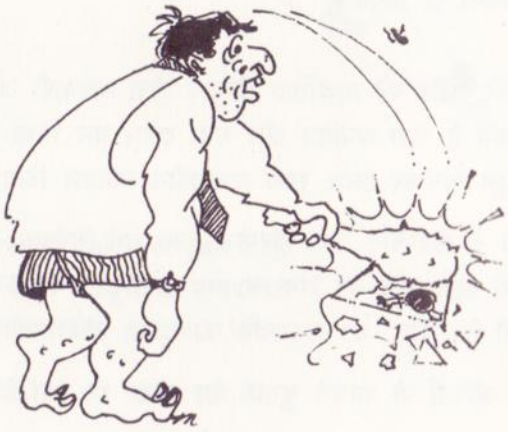

पर आदमी बच्चे रोकने की ज़िम्मेदारी लेने को कतई तैयार नहीं होते। उनके शरीर और "मर्दानगी" को किसी भी तरह से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये, बस।

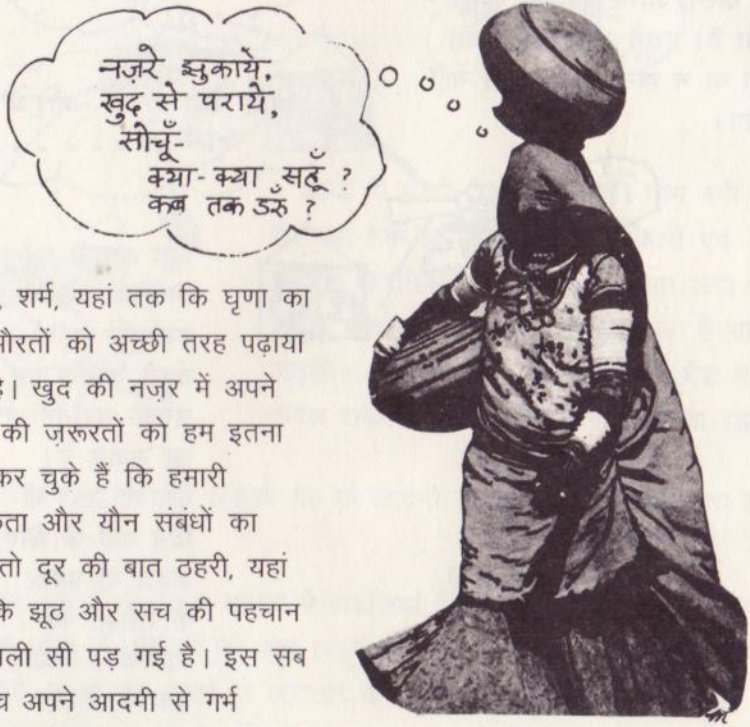

लज्जा, शर्म, यहां तक कि घृणा का पाठ औरतों को अच्छी तरह पढ़ाया गया है। खुद की नज़र में अपने शरीर की ज़रूरतों को हम इतना गौण कर चुके हैं कि हमारी यौनिकता और यौन संबंधों का जिक्र तो दूर की बात ठहरी, यहां तक कि झूठ और सच की पहचान भी धुंधली सी पड़ गई है। इस सब के बीच अपने आदमी से गर्भ निरोधक की बात कर पाना और भी मुश्किल हो जाता है।

हमारे शरीर की प्राकृतिक क्रियायें जैसे माहवारी जो हमारे प्रजनन शक्ति की सूचक है, उसे अपवित्र और गंदा करार कर दिया गया है। उस समय हमें अछूत मानकर हमारे साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है।

ऐसे में नॉरप्लांट जैसे हॉरमोन युक्त गर्भ निरोधक जिनके कारण कई दिन तक भारी खून जाने की संभावना बढ़ जाती है– सामान्य जीवन को अस्तव्यस्त कर देती है। "छूत" का डर, पति का गुस्सा और बाकी सभी का मुंह सूजा हुआ।

तो औरतों के सामने चुनाव का रास्ता ही क्या है?

या तो बार-बार गर्भ धारण करने के
खतरे या फिर मजबूरी में ख़तरनाक
गर्भ निरोधक तरीके इस्तेमाल करना

दोनों स्थितियां हमें मान्य नहीं हैं।

नई पहचान

औरतें बच्चे पैदा करने की मशीन नहीं हैं।
हमारा अपने शरीर के साथ एक गहरा रिश्ता है। हमारी भावनाएं, कटु–मधुर अनुभव हमारी यौनिकता से जुड़ी हुई है जिन्हें हमें फिर से पहचानना है, उभारना है।

गर्भ निरोधक को हमारे स्वास्थ्य व यौनिकता, और उसे नियंत्रित करने वाली सामाजिक मान्यताओं से अलग करके देखना और बरतना तो औरतों को आधे इन्सान के रूप में देखने वाली बात हुई।

अपना अकेलापन तोड़ कर औरतें आज पितृसत्ता द्वारा रचित आधी–अधूरी व गलत जानकारी का विरोध कर रही हैं। और मिलकर सही और सहज तरीकों से अपनी समझ बना रही हैं।

हमारे लिए क्या सही है और क्या खतरनाक है – यह हम औरतें तय करेंगी। आखिर शरीर हमारा है और किसी भी कदम का अन्जाम हमें भोगना पड़ता है।

विरोध से टक्कर लेते हुए भी औरतों को अपनी प्रजनन शक्ति से जुड़े सभी निर्णयों को अपने हाथों में लेना होगा।

इस देश की औरतों को चयन करने की
असली आज़ादी और ताकत तभी मिलेगी

वार
नॉरप्लांट
का

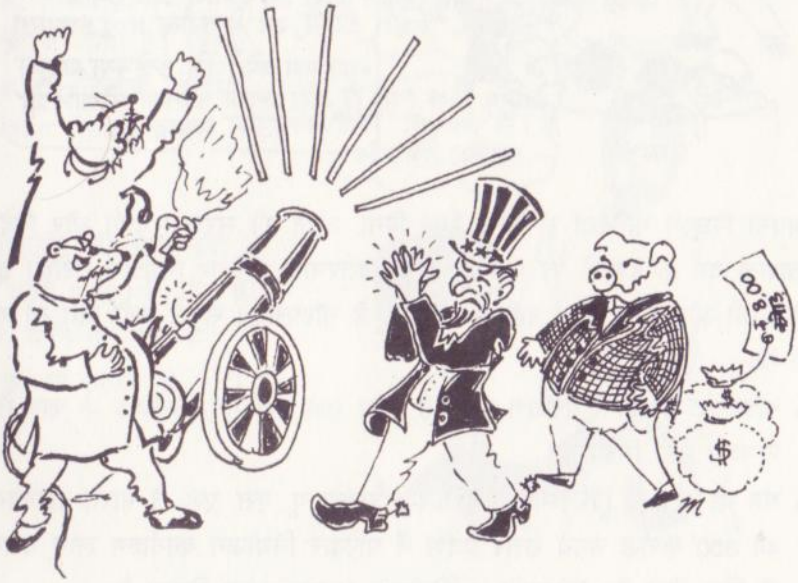

शक्ति हमारी
निर्णय किसका ?

हमारे समाज में पुरानी प्रथा चली आ रही है कि बच्चों को जन्म देना और उन्हें पालना–पोसना औरतों का काम व ज़िम्मेदारी है। पर हमारी इस प्रजनन शक्ति के बारे में निर्णय कौन लेता है? ये शक्ति हमारे हाथ में क्यों नहीं हैं?

अपनी पिछली गल्तियों से सीख लिए बिना, आज की सरकार देशी और विदेशी शासक वर्ग के इशारों पर एक बहुत ही ख़तरनाक परिवार नियंत्रण तरीका इस देश की औरतों पर थोप रही है–और वो है नॉरप्लांट। सबसे बड़ी बात तो यह है कि–

- नॉरप्लांट पर अभी परीक्षण जारी है, और उसे एक गर्भ निरोधक के रूप में मान्यता नहीं मिली है।
- यह भी सुना है कि अमेरिका की एक संस्था यू. एस. एड. ने भारत सरकार को 800 करोड़ रुपये उत्तर प्रदेश में परिवार नियोजन कार्यक्रम लागू करने के लिए दिये हैं। नॉरप्लांट गर्भनिरोधक उसका अहम हिस्सा है।

स्वास्थ्य व्यवस्था ने 1972 से आबादी पर नियंत्रण पाने के लिए जो रूख अपनाया वो है –

- औरतों की गर्भ निरोधकों के इस्तेमाल में कम से कम भागीदारी और नियंत्रण हो,
- इस्तेमाल के तरीकों का लंबे अर्से तक असर हो,
- लोगों पर लागू करने में आसान हो और सस्ता पड़े।

इसीलिए सरकार रुकावटी गर्भ–निरोधक जैसे निरोध, डायफ्रैम, ग्रीव टोपी जो सेहत के लिए ख़तरनाक नहीं है, की जगह बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बनाये तरह–तरह के हॉरमोन युक्त गर्भ निरोधक औरतों पर जान–बूझकर थोप रही है।

नॉरप्लांट–आर का आविष्कार अमेरिका के पॉप्युलेशन काउंसिल ने किया है। इसका फिनलैंड की लिएरस कंपनी द्वारा निर्माण किया जा रहा है।

एक नॉरप्लांट की आज की कीमत रुपये 1,800 है और ये 5 साल, यानि 60 मासिक चक्र तक गर्भ ठहरने से रोकता है।

किसके ठेकेदार ?
आई. सी. एम. आर.

नॉरप्लांट अनुपजाऊ नलियों के जरिए काम करता है। नॉरप्लांट II में दो नलियां लगाई जाती हैं।

नॉरप्लांट II के तीसरे चरण का परीक्षण अप्रैल 1983 में आई. सी. एम. आर के दस मेडिकल कालेजों में शुरू किया गया था। आई. सी. एम. आर के आंकडों के अनुसार करीब 1569 औरतों को नॉरप्लांट II लगाया गया था।

नॉरप्लांट II आजकल बाजार में उपलब्ध नहीं हैं पहला कारण यह है कि दूसरे देशों के आंकडों से यह पता चला है कि जिन औरतों का वजन सत्तर किलोग्राम से ज्यादा है। उसमें नॉरप्लांट तीन साल बाद काम करना बंद कर देता हैं दूसरा यह कि इसको बनाने में इस्तेमाल होने वाला इलास्टोमर अब बाजार में मिलना बंद हो गया है। इसको ध्यान में रखते हुए छः नलियों वाले नॉरप्लांट I के परीक्षण के बारे में विचार किया गया। नॉरप्लांट I पहले से ही 26 देशों में उपलब्ध हैं अब इसे दूसरे गर्भ निरोधक तरीकों जैसे, कॉपर.टी, गोली और निरोध के साथ–साथ औरतों के सामने को पेश किया जा रहा है।

इसका परीक्षण अब मेडिकल कालेजों के प्रसूति और स्त्री रोग विभाग के दस ह्यूमन रिप्रोड्क्शन रिसर्च सेंटर्स में किया जा रहा है। यहां पर नॉरप्लांट I और II के दूसरे और तीसरे चरण के परीक्षण पहले ही किए जा चुके हैं।

यह सेंटर्स हैं:

ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंसेज नई दिल्ली, आर. जी. कर. मेडिकल कालेज कलकत्ता, पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च चंडीगढ़, मेडिकल कालेज बड़ौदा, जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कालेज बेलगाम, सैट हास्पिटल त्रिवेन्द्रम, मेडिकल कालेज मदुरई, कस्तूरबा अस्पताल नई दिल्ली, मेडिकल कालेज कटक, सफदरजंग अस्पताल नई दिल्ली।

इन दस केन्द्रों में एक साल के अंदर सौ औरतों का नॉरप्लांट । के परीक्षण के लिए नाम दर्ज किया गया है। कुल मिलाकर इस परीक्षण के लिए एक हजार औरतों का नाम दर्ज किया जाएगा।

नॉरप्लांट ॥ के परीक्षण के माहवार फॉलोअप के आंकडों से पता चला है कि परीक्षण के लिए चुनी गई 18 औरतों में से 7 इस परीक्षण को आगे जारी रखने के लिए तैयार नहीं है। उनका कहना है इससे उनके माहवारी चक्र में अनियमितता आई है।

हमारे देश में नॉरप्लांट का परीक्षण जारी है। इस परीक्षण द्वारा पता लगाया जायेगा कि क्या नॉरप्लांट गर्भ नियंत्रण के काबिल है। साथ ही इस परीक्षण से यह भी पता लगाया जायेगा कि नॉरप्लांट के इस्तेमाल से औरतों को क्या नुकसान हो सकता है। क्या वे इस्तेमाल बंद करने के बाद स्वस्थ बच्चे पैदा कर पायेंगी?

बच्चों के बीच अंतराल रखने के लिए नॉरप्लांट का प्रचार एक सरल, असरदार और सुरक्षित गर्भ निरोधक के रूप में ज़ोर–शोर से किया जा रहा है। नॉरप्लांट की सबसे गंभीर समस्या यह है कि इसे इस्तेमाल करने वाली औरत का इस पर कोई नियंत्रण नहीं रहता।

ये तरीका असरदार इसलिए है क्योंकि इस्तेमाल करने वाली औरत को तकलीफ होने पर भी वह इसे निकाल नहीं पायेगी। निकालना सिर्फ डाक्टर के हाथ में है।

नॉरप्लांट इसलिए ख़तरनाक है क्योंकि एक बार इसका असर शरीर में पड़ जाये तो यह हमारी सेहत के लिए अनजानी, अनचाही ख़तरनाक बीमारियां ला सकता है जिसका शायद उपचार भी न हो सकेगा।

आपको नॉरप्लांट के बारे में पता होना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि आप अगर किसी सरकारी अस्पताल में गर्भ गिरवाने, बच्चा पैदा कराने अथवा गर्भ निरोधकों से संबंधित सलाह लेने जाती है तो आपको नॉरप्लांट लगाने को कहा जा सकता है। इसलिए आपको यह समझना ज़रूरी है कि नॉरप्लांट पर अभी परीक्षण चल रहा है और अभी इसे लागू करने की शर्तें पूरी नहीं हुई हैं। ऐसे में अगर आप नॉरप्लांट लगवाती हैं तो आपका प्रयोग के लिए इस्तेमाल हो रहा है। यह आपका अधिकार है कि आप अपनी मर्ज़ी से गर्भ निरोध का चुनाव करें-निरोध, कॉपर-टी इत्यादि जो भी आपके शरीर को नुकसान न पहुंचाये। आपको परीक्षण में भाग लेने के लिए मजबूर करना आपके मानव अधिकारों का हनन है।

क्योंकि नॉरप्लांट का परीक्षण पूरा नहीं हुआ है इसलिए इससे क्या गंभीर बीमारियां हो सकती हैं यह अभी कोई नहीं कह सकता। यदि आप को तकलीफ़ होती है तो पूरा नुकसान और परेशानियां आपको भोगनी पड़ेगी। न सरकार आपका इलाज करायेगी न ही कमाई बंद होने का हर्ज़ाना देगी। और अगर हटवाने के बाद आपको बच्चा नहीं होता है तो उसका दुःख व तकलीफ़ भी आप अकेली ही सहेंगी। इन सब ख़तरों के बावजूद भी अगर आप नॉरप्लांट लगवाती हैं तो यह ज़रूरी है कि आप इसके बारे में पूरी जानकारी पा लें।

नॉरप्लांट के बारे में कुछ तथ्य

नॉरप्लांट रबर की छः नलियों से बना है जिनकी लम्बाई माचिस की तीली के बराबर है। इन नलियों में एक रसायन भरा हुआ है। ये नलियां आपकी बाजू के चमड़ी के अंदर की सतह के नीचे घुसा दी जाती हैं। हर समय इन नलियों से रसायन निकलकर आपके खून में रिसता रहता है और पांच साल गर्भ निरोधक का काम करता है। इसके बाद नॉरप्लांट को निकलवा देना ज़रूरी है — क्योंकि तब इसमें भरे रसायन का पूरा असर खत्म हो जाता है और तब गर्भधारण की संभावना बन जाती है।

बस एक बार डॉक्टर के पास-फिर 5 साल की छुट्टी!

गर्भ नियंत्रण से शरीर को नुकसान भी हो सकता है। इस्तेमाल में आसानी के साथ–साथ नुकसानों का ख़्याल रखते हुए ही इसका प्रयोग करना चाहिये। नॉरप्लांट लगा लेने पर आप अपनी प्रजनन शक्ति पर पांच साल के लिए पूरा नियंत्रण खो बैठेंगी। औरतों के अनुभव साफ बताते हैं कि डाक्टर इसे बीच में निकालने के लिए प्रायः राज़ी नहीं होते हैं क्योंकि वे अपना परीक्षण जारी रखना चाहते हैं। अगर आप कोई अन्य गर्भ निरोधक जैसे उदाहरण के तौर पर कॉपर-टी लगवाती हैं तो इसे कोई भी डाक्टर, नर्स व जानकार दाई निकाल सकती हैं।

नॉरप्लांट हमारे शरीर में कैसे काम करता है

औरतों का एक निश्चित व नियमित उपजाऊ चक्र या माहवारी चक्र होता है। इसका नियंत्रण हमारे शरीर द्वारा बनाये गए हॉरमोन करते हैं। ये हॉरमोन और कार्यों के साथ निम्न काम करते हैं —

- अंडकोश में हर माह एक अंडे को तैयार करने का संकेत देते हैं।
- गर्भधारण करने की तैयारी में बच्चेदानी की परत तैयार होने का संदेश देते हैं।
- औरत के अंडे आदमी के शुक्राणु से न मिलने पर बच्चेदानी की परत माहवारी के खून के रूप में झड़ जाने का आदेश देते हैं।

नॉरप्लांट की 6 नलियों में हमारे शरीर में बनने वाले हॉरमोन की भांति एक कृत्रिम रसायन भरा होता है जिसका नाम है–लेवोनोजेस्ट्रल। ये रसायन खून से धीरे–धीरे रिसकर हमारे शरीर को अंडे तैयार करने से रोकता है। अंडा न तैयार होने पर हमारा आदमी से यौन रिश्ता होता भी है तो हमें बच्चा नहीं ठहरता।

सब औरतें नॉरप्लांट इस्तेमाल नहीं कर सकतीं।

कुछ ऐसी स्थितियां हैं जिसमें औरतों को नॉरप्लांट का कतई इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। खासकर तब जब आपका अभी कोई बच्चा नहीं हुआ हो और आप बच्चा चाहती हों। फिर कुछ और स्थितियां हैं जैसे कि अगर—

- आपको शक है कि आप गर्भवती हैं।
- आप बच्चे को दूध पिलाती हैं।
- आपको जिगर की बीमारी जैसे पीलिया हुआ हो।
- आपकी माहवारी नियमित व स्वस्थ नहीं है।
- आप को दिल की या रक्त चाप की समस्या है।
- आपको कैंसर है।
- आपको कभी गर्भावस्था के दौरान पीलिया हुआ है।
- आप तपेदिक, मिर्गी अथवा मानसिक बीमारी की शिकार हैं और इसके लिए कोई दवाई ले रही हैं।
- आपके स्तन/बच्चेदानी में गाठें हैं।

नॉरप्लाट लगवाने से पहले जाँच आवश्यक

यह पता लगाना कि क्या आपका कोई ऐसी बीमारी या तकलीफ़ तो नहीं जिसके होते हुये नॉरप्लांट लगवाना ख़तरनाक होगा–उस डाक्टर का काम है जो आपको नॉरप्लांट लगवाना चाह रहा है।

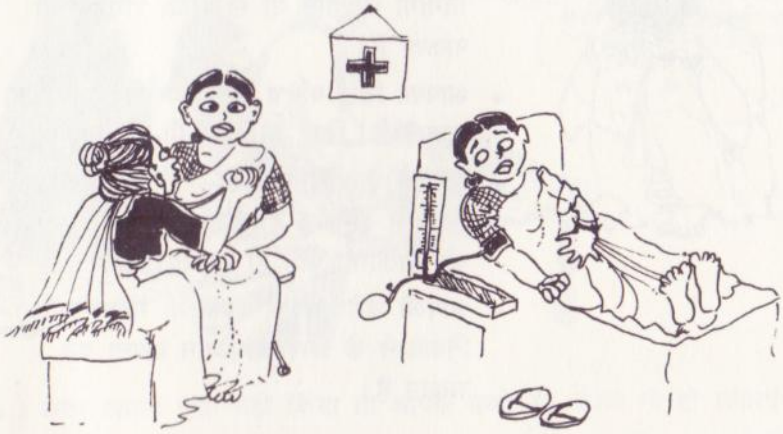

इसके लिए आपकी पूरी जांच आवश्यक है।

- वजन, रक्तचाप व दिल की धड़कन,
- पूरे शरीर की जांच जिसमें छाती की जांच भी शामिल है,
- प्रजनन अंगों की पूरी जांच, कैंसर के लिए भी परीक्षण,
- गर्भावस्था न होने का पूरा पता लगाना,
- खून, पेशाब, जिगर के ठीक से काम करने का पता लगाना और
- आपकी व आपके परिवार की बीमारियों के बारे में पूरी पूछताछ।

नॉरप्लांट इस्तेमाल करने से सम्भावित तकलीफ़े ।

नॉरप्लांट लगवाने से आपको कई तरह की बीमारियां हो सकती है जो इस प्रकार हैं–

- क्योंकि नॉरप्लांट का असर दिमाग के कई हिस्सों पर होता है। इसलिए इसके लगाने से दिमागी परेशानी या मानसिक रोग भी हो सकता है।
- आपको दिल की व रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। दिल का दौरा भी पड़ सकता है।
- आपको माहवारी बंद हो जाने, बार–बार माहवारी होने, व दो चक्रों के बीच खून जाने की शिकायत पैदा हो सकती है।
- आपकी अंडेदानी में फोड़ों के मवाद को निकालने के लिए ऑपरेशन करना पड़ सकता है।

साथ ही नॉरप्लांट से आपको–

- तेज़ सिरदर्द की शिकायत हो सकती है।
- मुहासे हो सकते हैं।
- आदमियों की तरह बाल उग सकते हैं व बाल झड़ भी सकते हैं।
- बेढंग रूप से वजन भी बढ़ सकता है।
- आपकी टांगों व शरीर की नसों में गांठ पड़ सकती है।
- चमड़ी में खुजली व पित्त की शिकायत हो सकती है।

नॉरप्लांट से पैदा दूरगामी समस्याएँ।

लम्बे दौर के ख़तरों के बारे में अभी पूरी जानकारी नहीं है। अब तक हुये परीक्षण में कुछ औरतों को कैंसर होने लगा है।

- अगर आपने ऐसा नहीं किया तो आपके बच्चे को कैंसर भी हो सकता है।
- लड़की पैदा हुई तो उसके यौन अंग लड़कों जैसे हो सकते हैं।
- नॉरप्लांट का रसायन मां के दूध में भी मिल जाता है, इसलिए अगर आपने स्तनपान करवाते समय नॉरप्लांट लगवा लिया तो आपके बच्चे में कैंसर और विशेष रूप से बच्चियों में विकृति पैदा हो सकती है।

नॉरप्लांट निकलवाने के बाद समस्याएं

कोई दावे से नहीं कह सकता है कि नॉरप्लांट निकलवाने के बाद किसी औरत को सामान्य व स्वस्थ बच्चा हो सकता है। आप अगर इस परीक्षण में शामिल हैं तो आप ही इस विषय में जानकारी भी पैदा करेंगी। आपसे ही पता चलेगा कि नॉरप्लांट का प्रजनन शक्ति और आगे आने वाली पीढ़ी पर क्या असर पड़ता है। वैसे भी बगैर परीक्षण के हम इस विषय में कुछ अनुमान तो लगा ही सकते हैं। क्योंकि नॉरप्लांट के रसायन से मिलते–जुलते रसायन के इस्तेमाल के बाद कुछ औरतें बच्चे पैदा नहीं कर सकी हैं।

नॉरप्लांट लगवा लेने के बाद भी जाँच आवश्यक

परीक्षण में शामिल औरतों की समय–समय पर डाक्टरी जांच होनी आवश्यक है। इसलिए डाक्टर आपको बार–बार अस्पताल आने को कहेंगे। समय पर अस्पताल पहुंचकर पूरी डाक्टरी जांच करवाना ज़रूरी है। इसके साथ ही अगर 6 हफ्ते तक आपको माहवारी नहीं होती है तो तुरन्त अस्पताल जाकर पता लगाना चाहिये कि कहीं आपको गर्भ तो नहीं ठहर गया है। आपको नॉरप्लांट तुरन्त निकलवा देना चाहिये अगर

- पहले जिक्र की गई बीमारियों में से कोई भी बीमारी हो जाती है।
- दिल की बीमारी का कोई अंदेशा जैसे काम करते वक्त सांस लेने में तकलीफ़ होती है, छाती में या बायें कंधे या बाजू में काम करते वक्त दर्द जो थोड़ी देर आराम करने पर चला जाता है, छाती में तीखा दर्द जो आराम करने के बावजूद भी खत्म नहीं होता।
- पिंडलियों में दर्द होता है।

• जिगर की बीमारी के कोई लक्षण जैसे भूख न लगना, आंखों मे पीलापन, पेट के दांयी ओर दर्द, खाने को देखने या सूंघने से मितली, पेशाब का रंग गहरा व टट्टी का रंग सफेद होना, उल्टी में खून जाना इत्यादि।

• रक्तचाप बढ़ने के लक्षण पैदा हो जायें जैसे सर में दर्द, चक्कर आना या दिल की धड़कन तेज़ हो जाना।

• माहवारी न आना और पेट के निचले हिस्से में ज़ोर का दर्द उठना। ये सब गंभीर बीमारियों के लक्षण हैं और आपको ऐसे में तुरन्त डाक्टरी मदद की ज़रूरत है। साथ ही अगर आपको नॉरप्लांट के रहते कोई बीमारी होती है तो आपको नॉरप्लांट लगाने वाले डाक्टर से सलाह लेकर दवा लेनी चाहिए।

नॉरप्लांट परीक्षण के दौरान कुछ औरतों के अनुभव

बड़ोदरा की 26 वर्षीया गौरी को नॉरप्लांट लगने के पहले एक लड़का था। वह बताती है–

"पहला बच्चा तो अनजाने में आ गया। तब गर्भ रोकने का कोई तरीका नहीं अपनाया था। फिर मुझे ए.एन.एम ने बताया कि एक ऐसा तरीका भी हैं जिससे पांच साल तक बच्चा नहीं होगा। ऐसा लगा कि इस तरीके को अपनाकर कोई चिंता नहीं, कोई तकलीफ नहीं, पूरे पांच साल तक। दो बार अस्पताल गई, नॉरप्लांट लगवा लिया। बहुत खुश थी। छोटू को उस समय दूध पिलाती थी। मुझे मालूम नहीं था कि किस अंधेरी गली में कदम रख रही हूं।

नॉरप्लांट लगवाने के बाद पता नहीं क्या हुआ मेरे शरीर को। हर आठवें दिन माहवारी शुरू हो जाती और 4-5 दिन तक खून जाता था। सारे शरीर में दर्द रहता और कुछ अच्छा नहीं लगता था। महीने के आधे दिन तो खून जाता था। घर में अलग–थलग बैठना बहुत बुरा लगता था। और फिर मेरा आदमी भी मुझसे नाराज़ रहता था। उन दिनों हमें अलग–अलग सोना पड़ता था। शारीरिक संबंध नहीं रख पाते इसलिए आदमी गाली–गलौज करता था।

नॉरप्लांट निकलवाना था। इसके लिए अस्पताल के बीसियों चक्कर लगाने पड़ेंगे यह न मालूम था मुझे। लेकिन डॉक्टर तो हर समय टालने का बहाना ढूंढते थे। पहले तो यह कहते रहे कि यह तो शुरू–शुरू की तकलीफ है, अपने आप ठीक हो जाएगी। इसके बाद तो कभी डॉक्टर नहीं मिलता तो कभी उसके पास समय नहीं होता। आखिर बड़े अस्पताल में जाने पर डर दिखाकर धमकी देने पर नॉरप्लांट निकलवा दिया।

"लेकिन मेरे लिए तकलीफों का दौर खत्म नहीं हुआ। नॉरप्लांट निकलवा देने के तीन महीने बाद मैं पेट से रही और जचकी होने तक लगातार रोज थोड़ा खून जाता ही रहा। साथ ही बदन दर्द और पेट के नीचे वाले हिस्से में दर्द होता रहता था। जब बच्ची हुई तो उस बच्ची का वजन कम था और एक आंख भी छोटी थी। मैं खुद भी कमज़ोर थी और वज़न भी बहुत घट गया था।

मुझे किसी ने यह नहीं बताया था कि मैं भी एक प्रयोग का हिस्सा है। कहा जाता है कि डॉक्टर तो भलाई चाहते हैं लेकिन क्या मुझे यह बताना ज़रूरी नहीं था कि नॉरप्लांट लगाने के बाद बच्चे को दूध पिलाना ठीक नहीं हैं?"

दिल्ली में रहने वाली शहनाज बेगम बताती हैं–

"मैंने डॉक्टरों से शुरू में पूछा था कि वे क्या रख रहे हैं। लेकिन उन्होंने मुझे चुप बिठाया। कहा कि यह तो गर्भनिरोध का बढ़िया तरीका है– विदेश से आया है। उन्होंने तो कहा इससे मुझे कोई भी तकलीफ नहीं होगी और यह मेरे लिए अच्छे से काम करेगा।

पर मेरा अनुभव तो अलग ही रहा। मुझे लगातार खून बहता रहा। चार साल परेशान रही। चार साल तक लगातार खून बहता रहा। दो साल के बाद उन्होंने खून रोकने के लिए कुछ इंजेक्शन दिए लेकिन उनका असर सिर्फ दो या तीन दिन रहता था। फिर वापस खून बहना चालू हो जाता था।

मैंने कम से कम पंद्रह से बीस बार डॉक्टरों से इसे निकालने को कहा। मैं तो हर आठ–दस दिन में जाती थी बाद–बाद में। मुझे डर था कि इतना खून बहेगा रोज़, तो मैं मर जाऊंगी। मैंने डॉक्टरों से पूछा कि मैं मर जाऊंगी तो मेरे बच्चों को कौन देखेगा? उन्होंने मुझे इतना ही कहा कि आज तक इस इंप्लांट से किसी की मृत्यु नहीं हुई।

मैं भी कहती रही – और उन्होंने फिर नॉरप्लांट आखिर में निकाल ही दी।"

मीना बेन की उम्र 28 वर्ष है और उसकी एक लड़की और एक लड़का है (नॉरप्लांट लगवाने से पहले)। वह अपने पति के साथ मिलकर बड़ोदरा में एक दुकान चलाती है। उसके जेठ अस्पताल में काम करते हैं जिनके कहने पर उसने नॉरप्लांट लगवाया था। वह कहती है–

"पहले तो हम कुछ भी इस्तेमाल नहीं करते थे। जब हमारा दूसरा बच्चा तीन साल का था तब मैं फिर पेट से थी। तब बच्चा नहीं चाहते थे, सो सफाई करवाने अस्पताल गई। मैं तांबी लगवाना चाहती थी। तब इस नए तरीके के बारे में सुना। ऐसा लगा कि नॉरप्लांट लगवाकर कोई भी मुश्किल नहीं और फिर पांच साल तक कुछ भी नहीं सोचना पड़ेगा। लेकिन नॉरप्लांट लगवाने के बाद मेरी जिन्दगी बदल गई।

"मुझे हमेशा यह डर रहता कि पता नहीं कब माहवारी शुरू हो जाएगी। हर पंद्रह दिन में मासिक शुरू हो जाता और फिर आठ दिन तक खून जाता था। बहुत कमजोरी हो जाती थी।

मैं घर के कामकाज में पूरी तरह हाथ नहीं बंटा सकती थी। बच्चों को भी ठीक से ध्यान नहीं दे पाती थी। जी मिचलाता था, इसलिए कुछ खाने को भी मन नहीं करता था।

फिर आखिर हारकर ढाई साल बाद नॉरप्लांट निकलवाने का फैसला किया। इतना आसान नहीं था। निकालने का तय किया, उसके छः महीने बाद डॉक्टरों ने निकाला। मेरा वजन सात किलो कम हो गया था इस दौरान। नॉरप्लांट निकलवाने के बाद माहवारी तो ठीक है। कमज़ोरी का इलाज करवा रही हूं। अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं हूं।"

शशि ने बताया।

"नॉरप्लांट लगाने के बाद से मेरा शरीर बीमारियों का घर बन गया है। मेरे थायरॉइड ग्रंथि पर असर हुआ। मेरी आवाज़ ही लगभग जाती रही और सांस फूलने लग जाती। जब वो लोग पूछने आए कि मैंने आना क्यों बन्द कर दिया है तभी मुझे शक हुआ, आखिर उनका मकसद क्या है? क्या ये लोग सिर्फ परीक्षण कर रहे थे? आखिर ये मेरे पास आए क्यों?

मैं फिर अस्पताल गई और कहा कि इसे निकाल दो। उन्होंने फिर मना कर दिया। मैं दो साल तक उनके पास जाती रही फिर बर्दाश्त से बाहर हो गया? मैं फिर एक दूसरे डॉक्टर के पास गई और उससे नॉरप्लांट निकलवा लिया।"

जब किसी परीक्षण के लिए लोगों का इस्तेमाल किया जाता है तो पहले उन्हें पूरी जानकारी देनी चाहिए तभी उनकी "हां" का कोई मतलब है। वैज्ञानिकों व सरकार की यह एक बहुत बड़ी नैतिक ज़िम्मेदारी है।

नॉरप्लांट को लगाने और हटाने की विधी

यदि आप तय कर ही लेते हैं कि आप नॉरप्लांट पर चल रहे परीक्षण में भाग लेना चाहती हैं या फिर आप को बिना बताये ही आप पर परीक्षण चल रहा हो, या फिर आगे चलकर आप इसका इस्तेमाल करना चाहें तो आप को पता होना चाहिए कि–

नॉरप्लांट एक छोटे ऑपरेशन द्वारा लगाया जाता है। नॉरप्लांट निकालने वाला ऑपरेशन कहीं ज़्यादा कठिन है क्योंकि इन नलियों के आसपास की जगह में गांठ बन जाती है। कभी–कभी ये नलियां शरीर में अंदर और किसी स्थान पर भी पहुंच सकती हैं।

नॉरप्लांट लगाना व निकालना दोनों ही जटिल काम हैं और इसे कर पाने के लिए डाक्टर को विशेष प्रशिक्षण देना ज़रूरी है। ऑपरेशन होने के कारण अगर इन्हें पूरी सफाई व सावधानी से न किया जाये तो घाव बिगड़ भी सकता है। नॉरप्लांट के इस्तेमाल के पांच साल पूरे हो जाने पर आवश्यक है कि उसे शरीर से निकाला जाये नहीं तो गर्भ ठहरने पर कई जटिल समस्याएं उठ सकती हैं।

मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं का ढहता ढाँचा क्यों नॉरप्लांट को सम्भालने में अक्षम है।

जहां मौजूदा स्वास्थ्य सेवाएं लोगों की आम ज़रूरत पूरी नहीं कर सकती, वहां नॉरप्लांट जैसे हॉरमोन आधारित गर्भ निरोधक का प्रचार एवं इस्तेमाल खतरनाक है। क्योंकि नॉरप्लांट के प्रयोग व इससे उठती समस्याओं से निपटने के लिए अत्यंत कारगर एवं सक्षम स्वास्थ्य व्यवस्था की आवश्यकता है।

नॉरप्लांट के परीक्षण में शामिल औरतों से पता चला कि कईयों के जख़्म पक गये और कई गड़बड़ियां पैदा हुई। जब बड़े पैमाने पर हर छोटे–छोटे स्वास्थ्य केन्द्र में नॉरप्लांट लगाया जायेगा, जहां सफाई और देखभाल का स्तर गिरा हुआ है, तो ज़ाहिर है कि उसका नतीजा कितना ख़तरनाक होगा।

यदि नॉरप्लांट से उत्पन्न तकलीफों से परेशान कोई औरत उसे निकलवाना चाहे भी तो वह ऐसा नहीं कर सकती। उसके लिए चीर–फाड़ की ज़रूरत है। और अस्पताल के डाक्टर आसानी से ऐसा करने से रहे–उनका परीक्षण कहीं फेल न हो जाये। और एक नॉरप्लांट जिसकी कीमत आज रुपये 1800 हैं, कहीं व्यर्थ न जायें।

आज, चीर–फाड़ के ज़रिये "एड्स" रोग के विषाणु फैलने के खतरे को देखते हुये खुद चिकित्सक चीर–फाड़ का कम से कम प्रयोग करते हैं। आज इस गर्भ नियंत्रण कार्यक्रम से करोड़ों औरतों को उसी खतरे में झोंका जा रहा है।

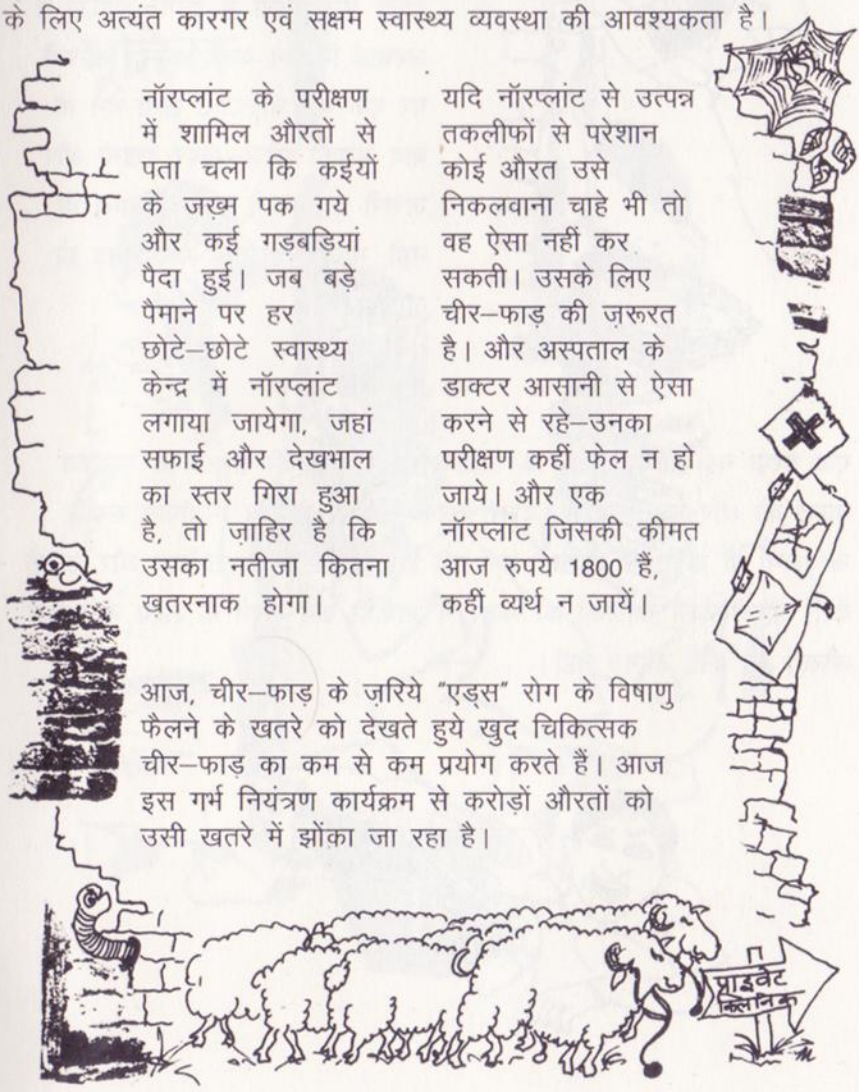

निश्चित है कि हमारे देश की मेहनतकश, गरीब औरतें इस कार्यक्रम का मुख्य निशाना बनाई जायेंगी। दूर–दराज इलाकों के गांवों में बसने वाली और शहरों में झुग्गी–झोपड़ी में अस्थाई ठिकाने वाली मज़दूर औरतों पर एक बार नॉरप्लांट लगा देने के बाद उनकी खोज–खबर रखना और ज़रूरी उपचार दे पाना मुश्किल ही नहीं, मौजूदा हालातों में असंभव हो जायेगा।

एक तरफ नई आर्थिक नीति के तहत सरकार पहले ही से सीमित स्वास्थ्य बजट को और घटा रही है। दूसरी तरफ सरकार परिवार नियोजन संबंधी कार्यक्रमों के बजट में बढ़ोत्तरी कर रही है। ज़ाहिर है कि सरकार और उसके देशी और विदेशी मालिकों की नज़र में आबादी कम करने के लक्ष्य के सामने औरतों की कोई कीमत नहीं।

महिला आन्दोलन की भूमिका

डाल सिर ओखल में,
अब पछताये क्यों ?
ये जंग है कोख का,
संघर्ष चलेगा यूँ !

गर्भ नियन्त्रण बनाम जनसंख्या नियन्त्रण

अपनी प्रजनन शक्ति पर खुद नियंत्रण करना और पूरी स्वास्थ्य सेवाओं और जानकारी के बल पर अपना गर्भ नियंत्रण करना हर औरत का मूल अधिकार है। यह हमारे जीवन संघर्ष का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

ये झूठ है कि हम गर्भ नियंत्रण के खिलाफ़ हैं। हम ऊपर से थोपे जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम का खुलकर विरोध करती हैं और जिसका एकमात्र उद्देश्य देश की आबादी और जन्म दर घटाना हो उस तरह के नियंत्रण कार्यक्रम का भी विरोध करती हैं।

हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक कारणों को अहमियत देते हुये ही हम तय करते हैं कि हमारे कितने बच्चे हों।

सवाल किसी एक गर्भ निरोधक का नहीं, बल्कि औरतों के प्रजनन अधिकारों और हमारे स्वास्थ्य का है। पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था और वैज्ञानिक समुदाय का ग़ैर–ज़िम्मेदाराना रवैया और सरकार, दवा कंपनियों, अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक और व्यापारी हितों वाला दृष्टिकोण हमारे अधिकारों को चोट पहुंचा रहा है।

स्वतंत्र चयन

महिला आंदोलन के "स्वतंत्र चुनाव" करने के नारे को सरकार अपने मकसद के लिए भुना रही है। उनका कहना है कि वो परिवार नियोजन के साधनों की सूची बढ़ाकर औरतों को चयन की स्वतंत्रता दे रहे हैं। पर हमारे अनुभव और संघर्ष कुछ और सच्चाइयों का उजागर कर रहे हैं।

पहली बात

सरकार कैसे गर्भनिरोध चुनाव की बात कर रही है जब हम ये नहीं जानते कि–

- उनकी स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित होने की कोई गारंटी नहीं है।
- वो लम्बे दौर तक कितने ख़तरनाक व असरदार हैं इसका कोई अनुमान नहीं हैं।
- एक बार लगाने के बाद उसके हानिकारक प्रभावों से शरीर कभी मुक्त नहीं हो सकता है।

जब हर चुनाव एक खतरा हो तो चुनाव कैसा?

- बार–बार गर्भ धारण की तकलीफ़ या फिर ख़तरनाक गर्भ निरोधक ये कैसा चयन?
- गरीबी, लाचारी और रोजी की मज़बूरी में किया हुआ निर्णय कैसा चयन?
- गर्भ निरोधक को लगवा लेने के चयन पर उसे निकलवाने का अधिकार नहीं तो ये कैसा चयन?

स्वतंत्र चयन

दूसरी बात

महिला आंदोलन से उठा नारा है–पूर्ण जानकारी सहित गर्भ–निरोध का स्वतंत्र चयन करने का अधिकार हर औरत को होना चाहिए।

पर आज की सरकार, स्वास्थ्य व्यवस्था और वैज्ञानिक समुदाय–

- केवल एक तरफ़, आधी–अधूरी जानकारी ही दे रहे हैं। नये गर्भ निरोधकों के वर्तमान और भावी ख़तरों को जानबूझ कर दबाया जा रहा है।
- जिन औरतों को इस प्रकार के गर्भ निरोधक लगाये जा रहे हैं, उन्हें बताया नहीं जाता कि वो उस गर्भ निरोधक पर चल रही जांच और प्रयोग का हिस्सा बनाई जा रही हैं। जबकि उन्हीं के अनुभवों, परेशानियों से उस गर्भ निरोधक की स्वास्थ्य के लिए सुरक्षा और वो गर्भ रोकने में कितना कारगर है इसका अनुमान लगाया जायेगा।

इस सबका साफ़ उदाहरण है–नॉरप्लांट और इससे पहले नेटएन टीके के साथ औरतों के अनुभव।

स्वतंत्र चयन

तीसरी बात

स्वास्थ्य व्यवस्था सरकारी तंत्र का कहना है कि जब किसी गर्भ निरोधक पर जानकारी उपलब्ध कराई गई है तो फिर औरत का व्यक्तिगत निर्णय है कि वह उसे अपनाये या नहीं। पर नॉरप्लांट और अन्य रसायनिक गर्भ निरोधकों के बीच चयन करना एक व्यक्तिगत या निजी चयन नहीं हो सकता। क्योंकि ये गर्भ निरोधक करोड़ों औरतों के स्वास्थ्य पर गहरा और ख़तरनाक असर करेंगे, साथ में वो आने वाली पीढ़ियों के लिए अनजाने और ख़तरनाक प्रभाव डाल सकते हैं।

हमारे लिये प्रजनन स्वतंत्रता का सीधा लेनदेन हमारी भौतिक असलियत से है - यानि रोज़गार, आवास, खुद और बच्चों के लिये जीवन सुरक्षा और जन सुविधाओं की उपलब्धी पर ।

हमारे लिए स्वतंत्र चयन तभी संभव होगा जब राजसत्ता और समाज में मूलभूत परिवर्तन लाये जाएंगे।

जहाँ वर्ग, जाति और औरत–आदमी के बीच के रिश्तों में ग़ैर–बराबरी को खत्म किया जायेगा। और बिना संघर्ष किए यह नहीं होगा।

वर्तमान सरकार और शासक वर्ग देश के लिए जिस आर्थिक नीति को अपना रहे हैं, उस हिसाब से आम–जनता पर ज़ोर–ज़बरदस्ती और बढ़ने वाली है। एक ओर तो सरकार मलेरिया ओर तपेदिक रोकने के कार्यक्रमों में हो रहे खर्चे पर 25.5 करोड़ रुपये की कटौती यह कह कर कर रही है कि सरकार के पास पैसे नहीं है।

दूसरी ओर परिवार कल्याण कार्यक्रम के बजट में 34 प्रतिशत वृद्धि की गई है। मातृ शिशु कल्याण कार्यक्रम में नाममात्र बढ़ोत्तरी की गई है। विशेष ज़ोर तो परिवार नियोजन ख़ासकर औरतों के लिए नॉरप्लांट जैसे नये हॉरमोन युक्त गर्भ निरोधकों पर दिया जा रहा है।

इन नये गर्भ निरोधकों को हम पर लादने के नये और निराले तरीके निकाले जाएंगे। अब तक तो —

- सरकारी कर्मचारियों को अपनी नौकरी की खातिर टार्गेट पूरे करवाने पर विवश किया जाता है और अब बात चल रही है कि दो से ज़्यादा बच्चे होने पर
- जन प्रतिनिधि के रूप में चुनावों में खड़े होने पर रोक लगाई जाएं
- मेटर्निटी बेनिफ़िट सुविधाएं न दी जाएं
- राशन की मात्रा में कटौती की जाए

पान-पनसारी
नये स्वास्थ्य अधिकारी

शासक वर्ग और सरकार "विकास" के नाम पर ग़ैर–सरकारी और स्वैच्छिक संस्थाओं को विशेष अनुदान केवल इस प्रकार के गर्भ निरोधक हम पर थोपने के लिए दे रही है। ऐसी संस्थाओं को जिनके पास इसे संभालने लायक क्षमता ही नहीं है।

अचरज की बात तो यह है कि अब सरकार दूर–दराज इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाने के बजाय कुछ ख़ास प्रकार के रसायनिक गर्भ निरोधक जैसे डेपो प्रोवेरा सुई की बिक्री दवाई की दुकानों के ज़रिए करने वाली है।

सरकार के "सोशल मार्केटिंग" कार्यक्रम का हमें विरोध करना होगा क्योंकि —

- औरतों को रसायनिक गर्भ निरोधक माफिक हैं या नहीं इसकी जांच की जा सकेगी। और स्वास्थ्य सेवाओं की ग़ैर–मौजूदगी में इस्तेमाल से उठती जटिल समस्याओं का उपचार नहीं हो पायेगा।

नेट एन टीका के खिलाफ अभियान

स्त्री शक्ति संगठन, हैदराबाद के एक महिला समूह ने 1985 अप्रैल में यह पाया कि औरतों को नेट एन गर्भ निरोधक सुई परीक्षण के अंतर्गत बग़ैर उनकी जानकारी के लगाया जा रहा था। औरतों को सिर्फ यह बताया गया कि इससे गर्भ नहीं ठहरेगा पर इसके क्या हानिकारक परिणाम हो सकते हैं उसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं दी गई।

तो शुरू हुआ नेट एन अभियान–इसमें पहली बार ख़तरनाक हॉरमोन आधारित गर्भ निरोधकों की तरफ, और ख़ासतौर पर जिस अनैतिक तरीके से उसका परीक्षण किया जा रहा था, पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

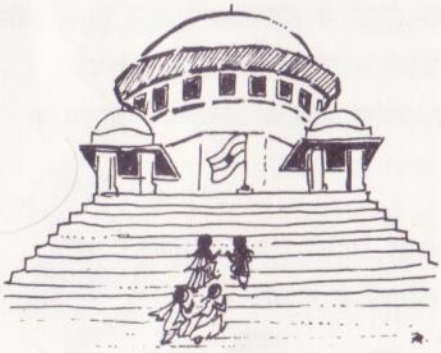

अभियान को ताकत देने के लिए देश के विभिन्न भागों के कुछ महिला समूहों ने मिलकर उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दायर की जिसमें सुई द्वारा लगाए जाने वाले गर्भ निरोधक नेट एन के परीक्षण और इस्तेमाल को चुनौती दी गई।

इस अभियान के प्रचार का नतीजा यह हुआ कि नेट एन को बाज़ार से हटा लिया गया लेकिन जल्दी ही उसकी जगह दूसरे हॉरमोन आधारित गर्भ निरोधकों ने ले ली। हमें यह अहसास हुआ कि हमें सारे हॉरमोन आधारित गर्भ निरोधकों का विरोध करना चाहिए था ना कि किसी एक का। इस सब के बावजूद आज फिर हमारी सरकार नेट एन को लागू करने के लिए ला रही है।

नॉरप्लांट के खिलाफ़ अभियान

इसी संदर्भ में यह मालूम हुआ कि भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद ने 1569 औरतों पर नॉरप्लांट का अधूरा परीक्षण शुरू किया था। नॉरप्लांट । का परीक्षण शुरू होने पर आई.सी.एम. आर ने तय किया कि यह जांच 20,000 औरतों पर की जाएगी। पर महिला समूहों के कड़े विरोध की वजह से औरतों की संख्या काफी हद तक कम कर दी गई।

परिवार नियोजन कार्यक्रम में जिस अवैज्ञानिक और गलत तरीके से गर्भ निरोधकों का इस्तेमाल शुरू किया जा रहा हे, उसका विरोध करना जरूरी था। साथ ही दूरगामी असर वाले हॉरमोन युक्त गर्भ निरोधकों के इस्तेमाल से जुड़े खतरे और उनसे जुड़ी पूरी जानकारी आम जनता के सामने रखने का अभियान शुरू किया गया।

दिल्ली में 26 फरवरी 1992 को महिला समूहों ने नॉरप्लांट से जुड़े खतरों और औरतों के स्वास्थ्य को नजर अंदाज करके उसके परीक्षण जैसे मुद्दों को स्वास्थ्य मंत्री को ज्ञापन दिया और 30 अप्रैल 1992 को स्वास्थ्य मंत्रालय के सामने धरना दिया

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 1992 पर सहेली संस्था ने नुक्कड़ नाटक तैयार करके दिल्ली की अलग.अलग बस्तियों में दिखाया।

नॉरप्लांट विरोधी अभियान की मांगे

- नॉरप्लांट–आर को परिवार नियोजन कार्यक्रम में शामिल करने की हर योजना को खत्म किया जाये।
- भविष्य में जारी किए जाने वाले हर लम्बे असर वाले हर आक्रमक गर्भ निरोधक जैसे नेट एन सुई, डेपो - प्रोवेरा, यौनिक छल्ला, नाक में छिड़की जाने वाली दवा, जनन शक्ति विरोधी टीका इत्यादि पर रोक लगाई जाये इस आधार पर कि हमारी स्वास्थ्य सेवायें इनके असर झेलने में सक्षम नहीं है। इनके इस्तेमाल से प्रजनन शक्ति पर औरतों का नियंत्रण खत्म हो जायेगा।
- नॉरप्लांट–आर के निरापद होने के बारे में और औषधि नियंत्रक द्वारा उसे मान्यता दिये जाने के फैसले के आधार को आम जानकारी बनाया जाये। नॉरप्लांट लगाने और हटाने की कठिनाइयों, उसके विपरीत असर को, व शोध प्रणाली संबंधित जानकारी को खुलासा किया जाये। अब तक हुए परीक्षण में शामिल हर औरत के स्वास्थ्य की मौजूदा हालत भी बताई जाए।
- हॉरमोन आधारित किसी भी गर्भ निरोधक का गैर–चिकित्सक तरीके से वितरण न किया जाये। क्योंकि ऐसे गर्भ–निरोधक गंभीर हानि पहुंचा सकते हैं व उन औरतों के स्वास्थ्य की सतत देखभाल आवश्यक है।

प्रजनन विरोधी टीके के खिलाफ़ अभियान

अब तक हमने ऐसे टीकों के बारे में सुना है जिसे लगाने से शरीर में उस रोग विशेष जैसे टी.बी., पोलियो से लड़ने की ताकत पैदा हो जाती है–जिसे हम "एन्टी बॉडिज़" कहते हैं।

पर आजकल भारत के नेशनल इन्स्टिटयूट ऑफ इम्यूननॉलाजी ने एक नये प्रजनन विरोधी टीके का आविष्कार कर, उस पर परीक्षण का काम शुरू कर दिया है। यह टीका गर्भावस्था को बीमारी मान उससे लड़ने के लिए गर्भवती औरत में एन्टीबॉडीज़ तैयार करता है। इस तरह उस औरत के शरीर में फलित अंडा बढ़ने के बजाय महावारी के साथ शरीर के बाहर आ जाता है। शरीर की बीमारियों से लड़ने की शक्ति में इस तरह की दखलअंदाजी करने से "एड्स" जैसे भयंकर रोग लगने की संभावना बढ़ सकती है। महिला संगठनों ने गर्भ नियंत्रण के लिए औरत के शरीर में इस तरह के इस्तक्षेप का प्रदर्शन एवं हस्ताक्षर अभियान से सख्त विरोध किया।

8 नवम्बर 1993 को विश्व के 18 देशों के 232 महिला संगठनों ने–जिनमें भारत से दिल्ली, बम्बई, बैंगलौर व मद्रास के संगठन शामिल थे – मिलकर इस टीके के शोध व परीक्षण पर तुरंत रोक लगाने की मांग की।

नॉरप्लांट के सम्बन्ध में हम क्या कर सकते हैं

हम सब की ज़िम्मेदारी है कि अपने स्तर पर मिल बैठ कर अपनी रणनीति तैयार करें और आपस में बांटे। कुछ सुझाव हैं :–

- अपने क्षेत्र में पता लगायें कि किस औरत को, कब और कहां नॉरप्लांट लगाया गया है, या लगाया जा रहा हैं। पूरे तथ्य इकट्ठे करना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि आगे चलकर यदि हम चिकित्सक इलाज करवाना चाहें या फिर नॉरप्लांट के खिलाफ़ कोई कार्यवाही करना चाहें, तो यह जानकारी ज़रूरी हो जायेगी।
- जानकारी इकट्ठा करने का काम हमें होशियारी से करना होगा। क्योंकि सरकार अपने इस कार्यक्रम में किसी प्रकार की रुकावट बर्दाश्त नहीं करेगी।
- हम औरतों और आम जनता के बीच नॉरप्लांट के बारे में जानकारी बांटे, अपने "चौकसी दल" तैयार करें और अन्य महिला समूहों एवं प्रगतिशील जन संगठनों से नाता जोड़ें ताकि हमारी ताकत और बढ़े।

हमारी कुछ व्यापक मांगे

आबादी बढ़ने के मुददे को संसाधनों के उपभोग में बढ़ोत्तरी से अलग नहीं देखना चाहिए। विश्व और राष्ट्रीय स्तर पर अपने हिस्से से कहीं अधिक संसाधनों की खपत पर नियंत्रण और फ़िजूल खर्चों पर रोक लगाने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

- विश्वस्तर पर ऋण और अनुदान को जनसंख्या नियंत्रण की शर्तों से नहीं जोड़ना चाहिए। यह आवश्यक है कि कर्ज़े को माफ़ कराया जाये और दुर्लभ संसाधनों को गरीबी हटाने में लगाया जाए।
- परिवार नियोजन कार्यक्रम को संपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं का अभिन्न हिस्सा बनाया जाये। परिवार नियोजन को स्वास्थ्य से अलग रखने की सरकार की आज की नीति का हम कठोर विरोध करें।
- बिना और शोध किये ही डायफ्रैम जो आज हमारे देश में उपलब्ध नहीं है ग्रीव टोपी, स्पंज, शुक्राणुनाशक दवाइयां और महिला निरोध जैसे विकल्प आम औरत के सामने रखें जायें। ये सरकार या फिर महिला आंदोलन अपने स्तर पर करें।
- साथ ही प्रजनन जागरूकता पर जानकारी, सही व संवेदनशील तरीके से किये गए नसबंदी और बिना शर्तों के सुरक्षित गर्भपात एक आखिरी चयन के रूप में सभी औरतों के लिए उपलब्ध कराया जाये।

अपने स्तर पर चर्चाओं के द्वारा ऐसे गर्भ–निरोधक कार्यक्रम तैयार करें जो औरतों की ज़रूरतों पर आधारित हों जिससे हम अपनी प्रजनन शक्ति पर ज़्यादा से ज़्यादा नियंत्रण कर सकें। अतः निर्णय औरतों के हाथ में आना बहुत ज़रूरी है।

ऐसे प्रयास जो संपूर्ण महिला स्वास्थ्य सेवा देने में सक्षम हो उन्हें अपना समर्थन दें। साथ में ऐसे समूहों द्वारा की जा रही शोध को भी बढ़ावा दें।

औरतों की बीमारियों के प्रति सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था एवं वैज्ञानिक समुदाय के नज़रिये में बदलाव की मांग जो हमारी आम बीमारियों को नकारात्मक नज़रिए से देखते हैं।

माहवारी के दौरान परेशानी, पीठ व पेट दर्द, पेशाब की नली का संक्रमण आदि का सही उपचार किया जाये। यौनिकता से जुड़ी हुई तकलीफ़ों को न दबाया जाये। ख़ास ध्यान इन स्थितियों पर भी दिया जाये–

- "बांझपन" जो कि यौन रोग, टी.बी. और असुरक्षित गर्भ निरोधकों इत्यादि के कारण एक बढ़ती हुई समस्या है।
- ग्रीव कैंसर जो कि हमारे देश में सबसे अधिक है और जिसकी जांच सस्ती और सरल है।
- जनन अंगों के संक्रामण रोग।

प्रगति के नाम पर विज्ञान और तकनीक के दुरूपयोग का विरोध करें। नकली, भ्रमित व ख़तरनाक दवाओं, जैसे ई.पी. फोर्ट, सिलैक्ट आदि का सख़्त विरोध करें।

कुछ और प्रयास

परंपरागत गर्भ निरोधक तरीकों व जानकर औरतों के नुख्सों पर आधारित जड़ी बूटी के उपचार की लिखा पढ़ी और जांच करें। विभिन्न इलाकों में उनके फायदे और नुकसान पर जानकारी इकट्ठा करें।

और संघर्ष

इस समाज में औरत पर प्रतिदिन हो रही हिंसा के ख़िलाफ़ संघर्ष को और तीव्र करें। हमारे स्वास्थ्य का मुद्दा हमारी उस चुप्पी से जुड़ा है जो आदमी की ज़बरदस्ती व मार को सहने के लिए मजबूर करता है। गर्भ–जल परीक्षण कर केवल लड़की भ्रूणों का गर्भपात, दहेज प्रताड़ना व हत्या, शारीरिक हिंसा, पति द्वारा परिवार के अंदर और बाहर होने वाले यौन "अत्याचार" और बलात्कार का सख़्त विरोध करने के लिए एक जुट हों।

औरतों के प्रति समाज व शासक वर्ग के रवैये के ख़िलाफ़ दूरगामी और दुरूस्त बदलाव के लिए ज़ोरदार और व्यापक संघर्ष करना होगा।

प्रचलित नाम/ब्राण्ड का नाम	रासायनिक नाम	निर्माता/कम्पनी/ संस्था	क्या है	कैसे काम करता है	समस्याएं	लोगों के बीच शुरू करने का स्तर
नेट एन	स्टीरॉइड नॉरेथिस्टेरॉन एनन्थेट (सांश्लेषिक प्रोजेस्टेरॉन यानि प्रोस्टिन)	शेरिंग ए.जी. जर्मनी	हर महीने मांसपेशियों में दिया जाने वाला इंजेक्शन	हर दो महीनों में दिया जाने वाला यह इंजेक्शन पीयूष ग्रन्थि के हॉरमोन को रोकता है। यह अण्डा पकने और अण्डोत्सर्ग को रोकता है	बिना औरत की जानकारी के या उसे बिना पता लगे यह इंजेक्शन दिया जा सकता है इसका दुष्प्रभाव न तो खत्म किया जा सकता है न ही इसे हटाया जा सकता है	चौथा चरण समाप्त हो चुका है। शहरों में इस्तेमाल के लिए तैयार
डिपॉ प्रोवेरा	डिपॉ मैडरौक्सी प्रोजेस्टेरॉन ऐसिटेट (कृत्रिम हॉरमोन यानि प्रोजेस्टिन)	अप जॉन कम्पनी यू. एस. ए.	हर दो महीनों में मांसपेशियों में दिया जाने वाला इंजेक्शन	अण्डोत्सर्ग रोकता है ग्रीव श्लेष्मा (म्यूकस) को शुक्राणु ग्रहण करने से रोकता है गर्भाशय की दीवारों को आरोपण के लिए अनुपयुक्त बनाता है जिससे बच्चा ठहर नहीं पाता	माहवारी चक्र में दोष पैदा करता है	प्रतिबंधिक मार्केट निरीक्षण के बाद बाजार में लाने की अनुमति मिल गई है

प्रचलित नाम/ब्राण्ड का नाम	रासायनिक नाम	निर्माता/कम्पनी/ संस्था	क्या है	कैसे काम करता है	समस्याएं	लोगों के बीच शुरू करने का स्तर
नॉरप्लांट और पॉप्यूलेशन काउंसिल द्वारा विकसित और फिनलैंड में निर्मित	लिवा नॉरजेस्ट्रॉल (कृत्रिम हॉरमोन यानि प्रोजेस्टिन)	लियराज फार्मास्यूटक्ल्स फिनलैंड 1800 रुपए या 34 $ प्रति पीस	पांच साल की अवधि के लिए चमड़ी के नीचे चले जाने वाले छः आरोपण	पांच साल की अवधि के दौरान शरीर में धीर-धीरे रिसने वाला हॉरमोन	इसे लगाने और निकालने के लिए डॉक्टर की जरूरत है। इससे औरत का अपने शरीर पर हक छिन जाता है हमारे देश में उचित स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया न होने के कारण लगाने के पहले और बाद में ठीक देखभाल नहीं हो पाती अगर नलियों को ठीक तरह न लगाया गया हो तो निकालते समय काफी परेशानियां हो सकती हैं अवधि खत्म यने से पहले इसे निकलवा लेना जरूरी है नहीं तो जान का खतरा हो सकता है माहवारी चक्र में दोष पैदा करता है। शरीर में दूसरी तकलीफें भी हो सकती हैं यह साबित नहीं हो पाया है कि औरत इसे निकलवाने के बाद फिर से गर्भ धारण कर सकती है या नहीं	जांच का तीसरा चरण चालू है यानि बीस हजार औरतों पर इसका प्रयोग किया जा रहा है

प्रचलित नाम/ब्राण्ड का नाम	रासायनिक नाम	निर्माता/कम्पनी/ संस्था	क्या है	कैसे काम करता है	समस्याएं	लोगों के बीच शुरू करने का स्तर
प्रजनन रोधक टीका	ऐन्टी ह्यूमन कॉरियॉनिक टीका	नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ इम्मयून्लॉजी, नई दिल्ली	हर डेढ़ साल के अंतराल पर लगने वाला टीका	यह टीका शरीर में प्रजनन संबंधी हॉरमोन की पहचान कर उनसे लड़ने और दबाने के लिए रोग प्रतिकारक (ऐन्टीबॉडी) तैयार करता है। यानि यह टीका शरीर के प्रतिकारी ढांचे पर असर करता हें	इसके असर को न तो खत्म किया जा सकता है न ही इसे हटाया जा सकता है। बिना औरत की जानकारी के इसे ऐन्टी टेटनस या हैजे के टीके के साथ दिया जा सकता है शरीर के पूरे प्रतिकारी ढांचे में गड़बड़ी पैदा कर सकता है	दूसरा चरण समाप्त हो चुका है

प्रचलित नाम/ब्राण्ड का नाम	रासायनिक नाम	निर्माता/कम्पनी/ संस्था	क्या है	कैसे काम करता है	समस्याएं	लोगों के बीच शुरू करने का स्तर
माला डी पर्ल	कम मात्रा की एस्ट्राजेन और प्रोजेस्ट्रॉन की गोलियां		खाने की गोलियां		सभी दुष्प्रभाव जो दूसरे कृत्रिम हॉरमोन से होते हैं। नियमित रूप से गोली न खाने पर इसका कोई असर नहीं होता गर्भ पर होने वाले इसके दुष्प्रभावों की पूरी तरह से अभी जानकारी नहीं है	बिना डॉक्टर की पर्ची से बाजार से खरीदी जा सकती हैं।
आर. यू. 486 (गर्भ अविरोधक दवा) रूसैल यूक्लैफ	प्रोस्टेग्लान्डिन हॉरमोन	होएस्ट ए. जी.	खाने की गोलियां		49 दिनों के बाद लेने से गर्भपात नहीं होता और बच्चा विकलांग पैदा हो सकता है। गोली लेते समय कम से कम तीन बार डॉक्टरी जाँच करवानी चाहिए। कभी कभी गर्भपात पूरी तरह से नहीं होता और सफाई करवानी पड़ती हैं दवा लेते समय उल्टी, दस्त, सिरदर्द और ज्यादा खून गिरने जैसी समस्याएं उठ सकती हैं।	

प्रचलित नाम/ब्राण्ड का नाम	रासायनिक नाम	निर्माता/कम्पनी/ संस्था	क्या है	कैसे काम करता है	समस्याएं	लोगों के बीच शुरू करने का स्तर
नेजल स्प्रे (औरतों और मर्दों के लिए)	नॉरथिस्टेरॉन (नेट)	ऑल इण्डिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज नई दिल्ली	नेट नासिका नली द्वारा औरतों और मर्दों को दिया जाता है।	फलस्वरूप औरतों में अनुपजाऊ माहवारी चक्र और मर्दों में शुक्रजनन से गर्भ नहीं ठहर पाता	नेट एन की तरह बिना औरत की जानकारी के दिया जा सकता है।	दूसरे चरण का प्रयोग जारी है।
सहेली	सेंटो कोमन गैर हॉरमोनिक रसायन	सेंट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट लखनऊ की खोज हिन्दुस्तान लेटक्स लिमिटेड का निर्माण	साप्ताहिक अवकाश में खाने की गोली	कोई जानकारी नहीं	कोई जानकारी नहीं	उत्पादन बढ़ने पर खुला बाजार में खुला उपलब्ध होगा

स्वास्थ्य मुद्दों पर कार्य करने वाले महिला समूह

आन्ध्र प्रदेश

अन्वेषी
ओ.यू.बी. 3,
उस्मानिया यूनिवर्सिटी कैम्पस,
हैदराबाद 500 007.

अस्मिता–रिसोर्स सैन्टर फॉर विमेन
4-3-12, आर.पी. रोड,
सिकन्दराबाद - 500 003.

बिहार

समुदाय
अतन्द पोस्ट रोसड़ा,
समस्तीपुर जिला
बिहार

दिल्ली

सहेली,
शॉप न० 105-108 के ऊपर,
डिफैन्स कॉलोनी फ्लाई ओवर
मार्किट,
नई दिल्ली - 110 024.

जागोरी
सी - 54, टॉप फलोर,
साऊथ एक्सटैंशन पार्ट - II,
नई दिल्ली - 110 049.

एक्शन इंडिया
5-24 जंगपुरा–बी,
राजदूत होटल के पीछे
नई दिल्ली

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम
5-24, जंगपुरा बी,
राजदूत होटल के पीछे
नई दिल्ली

नेचुरल फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन
ऑफ इंडिया
31, सैक्टर - 37,
अरुण विहार,
नोयडा - 201 303.

वी.एच.ए.आई
40, इंस्टीट्यूशनल एरिया,
साऊथ ऑफ आई आई टी,
नई दिल्ली - 110 016.

गुजरात

चेतना
लीलावती बेन लालभाई बंगला,
सिविल कैम्प रोड,
शाही बाग,
अहमदाबाद - 380 004.

सहज/सारथी
1, तेजस अपार्टमेंट्स,
53, हरी भक्ति कॉलोनी,
ओल्ड पादरा रोड,
बड़ौदा - 390 015.

हिमाचल प्रदेश

सूत्र
जगजीत नगर,
पो. ऑ. जुब्बार,
जिला–सोलन - 173 225.

कर्नाटक

आइक्या
न० - 377,
42 क्रास, जयानगर,
8 वां ब्लॉक,
बंगलोर - 560 082.

महाराष्ट्र

फोरम अगेन्स्ट द ऑप्रैशन ऑफ विमेन
29, भाटिया भवन,
बावरेकर मार्ग
गोखले रोड उत्तरी
दादर प०
बम्बई - 400 028.

जनसेवा मंडल
कोरित नगर,
नन्दुरबार,
महाराष्ट्र - 425 412.

डा० मीरा सद्गोपाल
रेणुप्रकाश ए,
तीसरा तल,
817, सदाशिवपेठ,
पूना - 411 030.

सर्च
गड़चिरोली,
महाराष्ट्र - 442 605.

मध्य प्रदेश

एकलव्य
राधा गंज,
देवास - 455 001.

छत्तीसगढ़ महिला जागृति संगठन
ए–38, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
शंकर नगर,
रायपुर 492 007.

तमिलनाडु

एल.एस.पी.एस.एस.
पो.बा. न० -7102
आयुर्वेदिक ट्रस्ट काम्पलैक्स,
तृचि रोड,
रमन्थापुरम,
कोयम्बटूर - 641 045.

सोसाइटी फॉर रूरल एज्यूकेशन एंड डेवल्पमेंट,
कलारू, अराकोनम - 631 002.
जिला नार्थ अरकोट,

उत्तर प्रदेश

ग्रामोन्नति संस्थान
गांधी नगर, पोस्ट–महोबा,
जिला–हमीरपुर 210 427.

सहभागी शिक्षा केन्द्र
13/96, मंशी पुलिया,
इंदिरा नगर,
लखनऊ - 226016

राजस्थान

महिला समूह
यादव शिव मंदिर के ऊपर,
अनासागर घाटी गंज,
अजमेर - 305 001.

आस्था
39, खरोल कॉलोनी,
ओल्ड फतेहपुरा,
उदयपुर - 313 001.

संदर्भ

बालसुब्रमणियम, विमल	:	कॉन्ट्रासेप्शन ऐज इफ विमेन मैटर्ड, लैसन्स फ्रॉम नैट कैम्पेन
हार्टमैन, बेट्सी	:	रिप्रोडक्टिव राइट्स एण्ड रांग्ज
सहेली	:	फैक्ट शीट ऑन नॉरप्लांट
गांधी नंदिता, शाह नंदिता	:	इशूज़ ऐट स्टेक
सुन्दरम, निर्मला, नलिनी, सत्यमाला	:	टेकिंग साइडस
प्रकाश पदमा	:	हैल्थ इशूज इन द कॉन्टेकस्ट ऑफ विमेंस मूवमेंट
शक्ति	:	विमेंस रिप्रोडक्शन हैल्थ कैम्पेन न्यूज
जार्ज सूजन, पेज निगल		
लैपे फ्रान्सिज़, कोलिन जोज़फ	:	फूड फर्स्ट
अन्वेषी विमेंस हैल्थ कलैक्टिव	:	सवालक्षा संदेहालू
सद्गोपाल मीरा	:	विमेंस फर्टिलिटी एण्ड प्लैनेटरी नैंस
अजमेर महिला समूह	:	शरीर की जानकारी
काली फॉर विमेन प्रकाशन		
ज्योतिका विंदी	:	हमारा शरीर हमारा हक
जागोरी प्रकाशन		
चयनिका, स्वातीजा, कामाक्षी	:	प्रजनन नियंत्रण की कोशिशें संवाद के प्रयास
सवारा, मीरा	:	इन सर्च ऑफ ऑवर बॉडीज
भारत सरकार	:	लिटरेचर ऑन नॉरप्लांट

माध्यम	:	वॉइसेज, इश्यू न० 2
वेना	:	वेना जरनल,
विमेंस ग्लोबल नेटवर्क फॉर रिप्रोडक्टिव राईटस,	:	इंटरनेशनल कैम्पेन फॉर हाल्ट टू रिसर्च ऑन ऐन्टी फर्टिलिटी वैक्सीन
प्रकाश, पदमा	:	न्यू अपरोच टू विमेंस हैल्थ केयर मीन्ज टू एन एण्ड
आय सी. एम. आर	:	फेज III क्लिनिकल ट्राइल विद नॉरप्लांट II कॉन्ट्रसेप्शन 1993:48 अगस्त
स्टेटस रिपोर्ट	:	फेज III क्लिनिकल ट्राइल विद नॉरप्लांट III
स्टेटस रिपोर्ट	:	फेज III क्लिनिकल ट्राइल विद नॉरप्लांट III
स्त्री स्वास्थ मंच	:	नॉरप्लांट की कहानी औरतों की जुबानी